द्रव्य सहायक—

श्रीमती सीताबना बहन जैन भार्या शाह कच्छ भुज वाले

वर्तमान कलकत्ता ३००)

श्री दलीचन्दजी रविचन्दजी वैद जैन फलौदी वाले

वर्तमान कलकत्ता ३००)

❀ ॐ नम ❀

श्रीमत्सुखसागरादि सद्गुरु विजयते तराम्

आत्म विज्ञान प्रकाश

卐

खरतरगच्छ नभोमणि, पूज्य, स्वर्गीयगणाधीश विद्वद्वय श्रीमान्
सुखसागरजी म० सा० के वर्तमान पट्टधर प० प्रवर
शान्तिमूर्ति गणनायक हेमेन्द्रसागरजी म० सा० के
आज्ञानुयायिनी पू० गु० प्र० स्व० श्री लक्ष्मी श्रीजी
म०सा० की स्व० शि०वि० शिव श्रीजी म०सा०
की शि०स्व० वि० श्री विमल श्रीजी म० की
आज्ञानुयायिनी वर्तमान प्रवर्तिनी बा० ब्र०
वि० प्रमोद श्रीजी म० सा०

सदुपदेशात्

卐

प्रकाशक

निर्मल प्रमोद ज्ञान मन्दिर फलौदी

वि० स० २०२८	वीर स २४९७ मूल्यामूल्य	प्रथम वृत्ति १०००

अहर्निश स्मरणीया

पूज्य स्व० जयवन्त श्रीजी महाराज साहब



जन्म—सम्वत् १९३९ पौष कृष्णा ९
दीक्षा—सम्वत् १९६४ माघ शुक्ला ८
स्वर्ग—सम्वत् २०१७ वैशाख शुक्ला ८

प्रातः स्मरणीया परम पूज्या श्री जयवत श्रीजी महाराज साहेब का संक्षिप्त जीवन चरित्र

राजस्थानान्तर्गत फलोदी निवासी सेठ श्री फूलचन्दजी साहब द की सतान मे एक पुत्री और तीन पुत्र थे। वि० स० १९३९ पौष ० नवमी को सब प्रथम पुत्री का जन्म होने से श्रेष्ठता व ज्येष्ठता नाते कन्या का नाम जेठी बाई रखा गया और पुत्रो के नाम ाणकलालजी मिसरीलालजी अमरचन्दजी रखा, श्री जेठी बाई मे पने योग्य माता पिता के सुसस्कार परिलक्षित होते थे। ाल्यकाल से धम घ्यान के प्रति अभिरुचि अत्यन्त सराहनीय थी। त्तम वातावरण मे पली पुसी सतान मे ही धार्मिक सस्कार पनपा रते हैं।

श्री जेठी बाई जब तेरह वष की थी तब ही आपका विवाह र दिया गया। आपके पति श्री सूरजमलजी गोलेछा पडलम ाला के नाम से जाने पहिचाने व्यक्ति थे। विवाह के २ वष श्चात् आपको एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई। जिस समाज मे त्री के जन्म से कोई खुशिया नही मनाई जाती फिर भी आपने ुत्री का जन्मोत्सव पुत्र जन्म से ही शानदार मनाया। क्या पुत्र ौर पुत्री मे अतर मानना मानवोचित है? क्या पुत्रियो की ाव्श्यकता नही है? समाज को योग्य बन्धुओ की, माताओ की, हिणियों की, साध्वियो की आवश्यकता है तो पुत्रियो के जन्म र हप मनाना ही होगा? सेठ सूरजमलजी और जेठी बाई ने पनी पुत्री का गुणानुसारी नाम नम्मीकुमारी रखा।

लक्ष्मी-लक्ष्मी हो आई

द्रव्य लक्ष्मी और भाव लक्ष्मी देने वाली कन्या सचमुच लक्ष्मी का अवतार थी। पुराना दिया हुआ ऋण घर बैठे होने लगा, अतः द्रव्य लक्ष्मी लौट आई। जब लक्ष्मी ११ महीने की हुई होगी तब अचानक सेठ श्री सूरजमलजी का स्वर्गवास हो गया। पुत्री का पिता का वियोग होने का भी क्या पता, क्योंकि उम्र लघु बालिका ही थी। वियोग की वेदना ने जेठी बाई को किया। चूंकि बाल्यवस्था में वैधव्य के महान दुःख को वाली अबलाओं के अविरल आंसुओं में इस दुःख के दिखते हैं।

आवश्यक सहारा

ऐसी विपदावस्था में जिन्हें योग्य व्यक्ति और समाज और धर्म का अपेक्षित सहारा न मिले तो पथ भ्रष्ट हो सकते हैं। परन्तु समयज्ञा जेठी बाई ने धैर्य धारण किया धर्मशाला में विराजित परम पूज्या गीतार्थ गुरु वर्य्या श्री लक्ष्मी श्री जी म० सा० के चरण कमलों की सेवा में उपस्थित हुई। पू गुरुवर्य्या ने धर्मोपदेश द्वारा जेठी बाई के अंतमन को वियोग हटाकर त्याग वैराग्य की ओर उन्मुख कर दिया। यही तो था कि इस अवस्था में क्या आवश्यक है?

शिक्षा का श्री गणेश

श्री गुरुवर्य्या की सेवा में अपने आपको उपकृत मानती हुई जेठी बाई ने पंच प्रतिक्रमण, स्तवन, सज्झाय आदि का अच्छा

भ्यास कर लिया। समय का सद्उपयोग शिक्षण से और प्राप्त
य का सदुपयोग चतुर्विध संघ की सेवा भक्ति से उदारता
व करने लगी।

तीर्थ यात्रा प्रवास

अपनी गुरु वर्य्या के साथ पालीताणा मे चौमासा किया और
गुण यात्रा की और उस पुण्य भूमि मे साधु साध्वियों को प्रतिला-
भ करने में अपने द्रव्य का उत्तम सदुपयोग किया। अपनी पुत्री
क्ष्मी को साथ लेकर दिपावली पर पावापुरी कलकत्ता कार्तिक
र्णिमा महोत्सव समेत शिखर यात्रा की। राजग्रह, अयोध्या, भाग-
पुर कुंडलपुर, चम्पापुरी, वैशाली, क्षत्रियकुंड, गुणियाजी, काशी
नारस आदि यात्राएं की। गुजरात मे अहमदाबाद तथा सेरीसा
ायणीजी की, आबू, अचलगढ महुआ, डाटा तलाजा कदमगिरी
नागढ, गिरनार, भावनगर, मारवाड मे नाकोडा, कापरडा
ैसलमेर, जालोर, आहोर, सिरोही आदि यात्राएं करके अपने
ावको धन्य बनाया।

मैं तो दीक्षा लूंगी

जेठी बाई ने अपनी पुत्री लक्ष्मी कुमारी से कहा 'बेटी मैं
इस असार संसार से विरक्त होकर चारित्र रत्न स्वीकारूंगी' बोल
तेरी क्या इच्छा है। यह सुनते ही पुत्री ने एक ही उत्तर दिया आप
दीक्षा लेवेंगी तो मैं भी दीक्षा लेउंगी। मा का हृदय हर्ष से
नाचने लगा, सोचा संतान हो तो ऐसी ही हो, जो संयम द्वारा
अपना और विश्व का कल्याण मार्ग प्रशस्त करे।

दीक्षा महोत्सव

आपके पूज्य जेठ सेठ श्री सौभाग्यमलजी गोलेछा से दीक्षा आज्ञा संपादन कर फलोदी में विराजित पूज्य श्री गणाधीश छगनसागरजी म० सा० के सानिध्य में वि० सं० १९६४ म सुदि ५ को धूमधाम से दीक्षा ली। दीक्षोत्सव के समय उपार्जित द्रव्य का सदुपयोग कर लाभ लिया।

दीक्षान्तर का नाम

दीक्षा के पश्चात आपका नाम जयवंत श्री जी म० सा० र और परम पूज्या श्री लक्ष्मी श्री जी म० सा० की शिष्या बनाई आपकी पुत्री लक्ष्मी कुमारी का दीक्षान्तर नाम श्री प्रमोद श्री म० सा० रखकर परम पूज्या श्री शिव श्री जी म० सा० की शिष उद्घोषित की गई।

सेवा और चातुर्मास

आप अपनी पूज्या गुरुवर्या की विनय वैयावच्च सेवा सुश्रु में तल्लीन रहती और आप के इंगित और आकारा के अनुसा आचरण करती हुई ज्ञान ध्यान तप जप में लीन रहने लगी दो चातुर्मास पूज्या लक्ष्मी श्रीजी म०सा० की सेवा मे किये, और ए चौमासा म० सा० श्री प्रेम श्री जी म० सा० श्री ज्ञान श्री म० सा की सेवा मे, एक चौमासा अरनोद मे पू० श्री देव श्री जी म० सा की सेवा मे किया। तत्पश्चात आप अपने महदुपकारिणी पूज्य श्री विमल श्री जी म० सा० की सेवा में रहती हुई बाल वृद्ध ग्ला तपस्वी आदि साध्वी समुदाय की मन वचन काया से सेवा शुश्रुस करके महान् लाभ प्राप्त कर धन्य हुई।

विशिष्ट तपस्यायें

एक मास क्षमण, पच्चीस, एक इक्कीस, अठारह, सोलह पद्रह, ग्यारह, दस और चत्तारो अठ दस दाय, वर्दिया, वीस स्थानक की बडी तपस्याओ के अलावा जीवन को तप पूत बना रखा था। तपस्या ही वह साधन है जिससे पूर्वोपार्जित कर्मों के बधन को तोडा जाता है।

श्रद्धा के चमत्कार

पाली चातुर्मास मे समय आप गौचरी के लिये पधार रही थी। सडक पर कृष्ण और भीम काय सप आपने पैरो मे लिपट गया। जिस सर्प को दूर से देखने से अथवा जिसकी चर्चा के श्रवण मात्र से अन्तर भयभीत होता है। उसे अपने पैरों लिपटा देखकर श्री जयवत श्री जी म० सा० वही स्थिर खडे रहे और मन ही मन में महा मन नवकार का स्मरण और दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरी कुशल श्री जी नाम स्मरण से ही वह सप परो से खुलकर गतव्य स्थान पर चला गया " बाद मे गिरगया।

एक बार राजगढ (मालवा) म आपने गौचरी के लिये किसी बडी पोल मे प्रवेश किया। दरवाजे का ऊपरी विसाल हिस्सा मानो आपके ऊपर पडने को था, इतने ही में आपने अपना सिफ एक हाथ ऊचा किया और वह ठहर गया। जब आप उस दरवाजे से शांति से बहार निकले चुके कि पाल सहित दरवाजा बडे धडाके की आवाज करता गिरगया। दर्शक लोगो की भीड ने आपकी महिमा और शील सयम एव सत्य का प्रभाव समझा।

वेदनीयोदय में समता

वि० स० १६६० माघ वदी ८ को फलोदी में पूज्या विमल श्री जी० म० सा० का स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात आपने मारवाड मेवाड, मालवा, कच्छ, गुजरात, सौराष्ट्र आदि प्रदेशों में चौमासे करके जैन शासन की महती प्रभावना की। धर्मध्यान और तपस्या का साधन औदारिक शरीर जीर्णशीर्ण हो ही जाता है। इसमे जो कुछ शुभ काम लेना हो वह ले लेना ही अच्छा है। पूर्व वेदनी के उदय से स्वयं श्री जयवंत श्री जी म० सा० पूज्य वायु की बीमारी से भिड गये। तीव्र वेदना काल में भी आप आवश्यक क्रियाओं के प्रति अत्यन्त ही सावधान थी, आपकी आठ वर्ष की लम्बी बीमारी के समय राजेन्द्रश्री प्रकाशश्रीजी ने श्रद्धापूर्वक अपनी सेवायें समर्पित की। श्री प्रकाश श्रीजी ने तो पूज्या श्री जयवन्त श्री जी म०सा० की सेवा के लिये तन मन वचन को लेकर रात दिन एक कर दिया।

वृद्धावस्था मे यदि सेवा शुश्रुषा करने वाले धर्म सहायक साथियो का सहयोग न मिले तो चित्त समाधि रहना असंभव है। अत इन सेवा सुश्रुषा करने वाली साध्वियों के ससर्ग से आप शांति पूर्वक, पच परमेष्ठि का जाप करती रहती थी।

पूज्या की कृपा से

मैने जो आगम व्याकरण न्याय, छंद काव्य कोष अलकार के अध्ययन अतिरिक्त प्राकृत मागधी भाषा में प्रवेश पाया वह आपकी छत्र छाया का ही प्रताप है। जब तक इस आत्मा में ज्ञान की ज्योति है तब तक उन महान् ज्ञानदात्री की विस्मृति हो ही नहीं सकती।

उन पूज्येश्वरीजी की स्मृतिमात्र शेष है

वि० स० २०२७ वैसाख सुदी आठम को समाधि पूर्वक स्वर्ग पधार गई । जगत को जगाने के लिये और अपने आपको पवित्र उच्च मर्यमित आत्मा को बनाने के लिए आपने जो उत्तम मार्ग अपनाया वह प्राणिमात्र के लिये अनुकरणीय और स्मरणीय है । आज आप शरीर से हमारे बीच विद्यमान नही है । परन्तु आपकी अमूल्य शिक्षायें अमर हैं और रहेंगी ।

मैं आपके चरणा मे शतश एव कोटिश कोटिश वन्दन करती हुई श्रद्धाञ्जलि अर्पित करके अपने आपको कृतार्थ मानती हू, और आप के कर कमलो मे यह पुस्तक आत्म विज्ञान प्रकाशक समपर्ण करती हू ॥ कृपया स्वीकारें ॥

आपकी स्मृति में अट्ठाई महोत्सव प्रभावना सहित तीन वरघोड़े और स्त्री पुरुषो का रात्री जागरण तथा जीव दया में प्रचुर द्रव्य और बृहश्शान्ति स्नात्रादि धर्म कार्य बहुत प्रशंसनीय हुए थे।

॥ शुभम् भूयात् ॥
आपकी विनीता आज्ञाकारिणी
राजेन्द्र श्री

आत्म विज्ञान प्रकाश

स्वर्गीय परमपूज्या श्री जयवन्त श्रीजी स्मरणार्थ

अथ ओगणत्रीस द्वार लिख्यते



❀ मंगला चरण ❀

॥ आत्म-श्लोक ॥

जिनेन्द्र पूजा, गुरु पर्युपास्ति ।
सत्वानुकम्पा शुभ पात्र धन ॥
गुणानुराग श्रुति राग मस्य ।
नृ जन्म वृक्षस्य फलान्य मूनि ॥ १ ॥

प्रथम नामद्वार । बीजू लेश्या द्वार । त्रीजुशर द्वार । चोथु अवगाहना द्वार । पाचमु संघयण द्वार । छट्टु सन्ना द्वार । सातमु संस्थान द्वार । आठमु कषाय द्वार । नवमु इन्द्रिय द्वार । दसमु समुद्घात द्वार । अग्यारमु दृष्टी द्वार । बारमु दर्शन द्वार । तेरमु ज्ञान द्वार । चउदमु योग द्वार । पनरमु उपयोग द्वार । सोलमु उपनवानी

मरयानु द्वार। सत्तरमु चवयानु द्वार। अठारमु आउखानु द्वार। उगणीसमु ' पर्याप्ति द्वार। वीसमु आहार द्वार। एकवीसमु गतागति द्वार। बावीसमु वेद द्वार। त्रेवीसमु भुवन द्वार। चौवीसमु प्राण द्वार। पचवीसमु पदा द्वार। छवीसमु धर्म द्वार। सतावीसमु जीव जोनी द्वार। अठावीसमु कुल कोटी द्वार। ओगणत्रीसमु अल्प बहुत्व द्वार॥

॥ हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे ॥

प्रथम द्वार॥ १ हवे साते नरके थइ एक दडक। ते नरकना नाम। घमा १ वसा २ शेला ३ अनया ४ रिष्टा ५ मघा ६ माघवती ७॥

॥ हवे भुवनपतिना दस दडकना नाम ॥

असुर कुमार २ नाग कुमार ३ सुवर्ण कुमार ४ विद्योत कुमार ५ अग्नि कुमार ६ द्वीप कुमार ७ उदधि कुमार ८ दिशी कुमार ९ वायु कुमार १० स्तनित कुमार ११ पाच दडक थावरना॥ पृथ्वी १२ पानी १३ अग्नि १४ वायु १५ वनस्पती १६ बेंद्री १७ तेंद्री १८ चौरिंद्रि १९ तिर्यंचपचेंद्री २० मनुष्य २१ व्यतर २२ ज्योतिषी २३ वैमानिक २४

॥ हवे बीजू लेश्या द्वार कहे छे ॥

लेश्या ६ ना नाम । कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शुक्लेश्या ६ नारकी, तेउ, वाउ, बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री । ए ६ दडके प्रथम ३ लेश्या । तिर्यंचपचेन्द्रियने । मनुष्य ने ६ लेश्या । १० भुवनपति व्यतर, पृथ्वी, पानी, वनस्पती । ए चार दडके । प्रथम ४ लेश्या । यौतिपी । तथा सौधर्म ईशान देवलोके । एक तेजो लेश्या । त्रीजे चोथे पाचमे देव लोके । पदम लेश्या । छट्ठा देव लोक थी ऊपरान्त सघले शुक्ल लेश्या ॥ २ ॥

॥ हवे त्रीजू शरीर द्वार ॥

शरीर ५ ना नाम कहे छे । औदारीक शरीर १ वैक्रीय शरीर २ आहारक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५ नारकी । दश भुवनपति व्यतर यौतिपी । वैमाणिक । ए चउ दडके त्रण्य शरीर । वैक्रीय तेजस कार्मण, पृथ्वी, पानी, अग्नि, वनस्पती, बेंद्री, तेंद्री, चउरिंद्री । ए सात दडके त्रण्य शरीर । औदारीक, तेजस कार्मण । वायु काय, तिर्यंच-पचेंद्री, ए बे दडके । आहारक विना-चार शरीर । मनुष्यने पाच शरीर ॥ ३ ॥

॥ चोथु अवगाहना द्वार कहे छे ॥

हवे मनुष्ये नारकीनी । अवगाहना । जघन्य, आगुलनो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी पाचसे धनुपनी । प्रथम नरके, जघन्य तीन हाथ, उत्कृष्टी पुणा आठ धनुपने ६ आगुल । बीजी नरके जघन्य पुणा आठ धनुपने ६ आगल उत्कृष्टी साढा पनर धनुपने बारा आगुल । त्रीजी नरके जघन्य साढा पनर धनुपने बारा आगुल । उत्कृष्टी सवा एकत्रीस धनुपनी । चौथी नरके जघन्य सवा एकत्रीस धनुप । उत्कृष्टी साढी बासठ धनुप । पाचमी नरके । जघन्य साढी बासठ धनुपनी । उत्कृष्टी सवासो धनुपनी । छट्ठी नरके । जघन्य सवासो धनुपनी उत्कृष्टी अढीसे धनुप । सातमी नरके जघन्य अढीसे धनुप । उत्कृष्टी पाचसे धनुपनी । दश भुवनपती व्यंतर । योतीपी । ए बारा दंडके जघन्य आगुलनो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी सात हाथनी । वैमानिक जघन्य आगुल नो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी पहिले बीजे देव लोके । सात हाथनी । त्रीजे चौथे देवलोके ६ हाथनी । पाचमे छट्ठे देव लोके पाच हाथनी । सातमे आठमे देवलोके चार हाथनी । नवमे दशमे अग्यारमे बारमे देवलोके । तीन हाथनी देही । नवग्रवेयके बे हाथनी देही । पाच अनुत्तर विमाने । एक

हाथनी देही । ए तेर दंडके देवता । उत्तर वैक्रीय करे तो लाख जोजननी देही । पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु ए चार दंडके जघन्य । तथा उत्कृष्टी अवगाहना । आंगुलनो असंख्यातमो भाग । प्रत्येक वनस्पती कायनी । अवगाहना जघन्य आंगुलनो असंख्यातमो भाग । उत्कृष्टी अवगाहना हजार योजन से काइक अधिक । बेंद्रीनी बारा योजननी । तेंद्रीनी तीन कोसनी । चउरिंद्रीनी चार कोसनी । तिर्यंच पचेंद्रीनी हजार योजननी । उत्तर वैक्रीय करेतो नवमो योजन । मनुष्य पचेंद्रीनी तीन गाउनी । उत्तर वैक्रीयकरेतो लाख योजननी देही ॥ ४ ॥

॥ पाचमो संघयण द्वार कहे छे ॥

ते संघयणना ६ नाम । वज्ररीषभनाराच संघयण । १ रीषभनाराच संघयण । २ नाराच संघयण । ३ अर्धनाराचसंघयण । ४ कीलकी संघयण । ५ छेवठु संघयण । ६ नारकी, दस भुवनपति । व्यंतर, योतीषी, वैमाणिक, पाच थावर । ए ओगणीश दंडके । असंघयण, बेंद्री, तेंद्री, चउरिंद्री, त्रणदंडके, एक छेवठु संघयण । मनुष्य पचेंद्री । तिर्यंच पचेंद्री ने ६ संघयण ॥ ५ ॥

३, चक्षुइंद्री ४, श्रोतेंद्री ५। नारकी दस भुवनपति, व्यंतर, योतीषी, वैमाणिक, तिर्यंचपचेंद्री, मनुष्यपचेंद्री, एमोल दंडके पाच इंद्री। पाच थावरने। एक फरसेंद्री, बेंद्रीयने, फरसेंद्री रसेंद्री, तेंद्रीने, फरसेंद्री, रसेंद्री घ्राणेंद्री, ए तीन होय। चोउरिंद्री ने। फरसेंद्री, रसेंद्री, घ्राणेंद्री, चक्षुइंद्री, ४ इंद्री होय ॥ ६ ॥

॥ दसमु समुद्घात द्वार कहे छे ॥

समुद्घात सातनानाम। वेदनीय समुद्घात १, कषाय समुद्घात २, मरणांतिक समुद्घात ३, वैक्रीय समुद्घात ४, तेजस समुद्घात ५, आहारक समुद्घात ६, केवली समुद्घात ॥ ७ ॥ नारकीने ॥ वायुने चार समुद्घात। वेदनी १, कषाय २, मरणांतिक ३, वैक्रीय ४, ए चार होय। दसभुवनपति। व्यंतर, योतिषी, वैमाणिक, तिर्यंच पचेंद्री। ए चउ दंडके पाच समुद्घात। वेदनी १, कषाय २, मरणांतिक ३, वैक्रीय ४, तेजस ५, पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पती, त्रण्य विकलेंद्री। ये सात दंडके। त्रण्य समुद्घात। वेदनी १ कषाय २ मरणांतिक ३। मनुष्यने सात समुद्घात होय छे ॥ १० ॥

॥ इग्यारमु दष्टी द्वार कहे छे ॥

दष्टी ३ ना नाम । समक्ति दष्टी १, मिश्रदष्टी २, मिथ्यात्वदष्टी ३ ॥ नारकी ॥ दश भुवनपति, व्यतर, योतीषी, वैमाणिक, तिर्यंच पचेंद्री । मनुष्य ए सोला दडके । त्रणयदष्टी । पाच थावरने । एक मिथ्यादष्टी । त्रणय विकलें द्रीने । समक्ति । मिथ्यात ए बे दष्टी ॥ ११ ॥

॥ बारमु दर्शन द्वार कहे छे ॥

दर्शन ४ ना नाम कहे छे । चक्षु दर्शन १, अचक्षु दर्शन २, अवधि दर्शन ३, केवल दर्शन ४ ॥ नारकी । दस भुवनपति । व्यन्तर, योतिषी, वैमाणिक । तिर्यंच पचेन्द्रि । ए पन्नर दडके । त्रणय दर्शन । चक्षु १ अचक्षु २ अवधि दर्शन ३ पाच थावर । वेंद्री ने तद्री । एक अचक्षु दर्शन । चौरेन्द्रि ने । चक्षुनें अचक्षु बेदर्शन । मनुष्य ने चार दर्शन ॥ १२ ॥

॥ तेरमो ज्ञान द्वार कहे छे ॥

पाच ज्ञान, तीन अज्ञानना नाम कहेछे । मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मनपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ मतिअज्ञान ६ श्रुत अज्ञान ७ विभग अज्ञान ८ । नारकी

दस भुवनपति । व्यन्तर । योतिषी । वैमाणिक । तिर्यंच पचेंद्रि । ए पन्नर दडके । त्रण ज्ञान । त्रण अज्ञान । ए ६ पामें । पाच थावरने मति अज्ञान । श्रुतअज्ञान ए बे पामे, त्रण विग्लेन्द्रिने । बे ज्ञान । तथा बे अज्ञान ए चार पामे मनुष्यने पाच ज्ञान । तीन अज्ञान ॥ १३ ॥

॥ चवदमोयोग द्वार कहे छे ॥

हवे योगपन्नरना नाम कहेछे । मनना ४ योग । सत्य-मनयोग १ असत्य मनयोग २ सत्यमृषामनयोग ३ असत्य मृषा मनयोग ४ । वचनना चार योग कहे छे । सत्य वचनयोग, असत्य वचन योग, सत्य मृषा वचनयोग । असत्य मृषा वचन योग कायाना, सात योग, वैक्रिय काया योग, वैक्रिय मिश्र काया योग० । औदारिक काया योग, औदारिक मिश्र काया योग, आहारक काया योग, आहारक मिश्र काया योग, कार्मण काया, नारकी, दस भुवनपति व्यंतर, योतिषी, वैमाणिक, ए चउद दडके ग्यार योग होय ॥ मनना चार वचनना चार, कायाना तीन । वैक्रिय कायायोग, वैक्रिय मिश्र काया योग. कार्मण काया योग ॥ पृथ्वी, पाणी, अग्नी, वनस्पति ने तीन योग । औदारिक, औदारिकमिश्रकाया योग. कार्मणकायायोग, वायु ने पाचयोग, औदारिकमिश्र वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण,

निग्रलेंद्रीय ने चार योग। औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मण ये तीन योग तथा असत्यमृषावचनयोग ये चार योग होय ॥ तिर्यंच पचेंद्री ने तेर योग होय, मनना चार, वचनना चार, कायाना पांच औदारिक, औदारिक मिश्र, वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, कार्मण, मनुष्य ने पन्नर योग होय ॥

॥ पन्नरमु उपयोगद्वार कहे छे ॥

उपयोग बारना नाम। पाच ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान। तीन अज्ञान। मति अनान, श्रुत अज्ञान, विभंग अज्ञान। अने चार दर्शन। चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन ए बार उपयोग छे। नारकी दस भुवनपति, व्यन्तर योतिषी, वैमाणिक, तिर्यंच पचेंद्री ए पन्नर दडके नव उपयोग। तीन ज्ञान, तीन अनान, तीन दर्शन ए नव उपयोग होय। पाच थावर ने तीन उपयोग। मति अज्ञान, श्रुत अनान, अचक्षु दर्शन होय। बेंद्री, तेंद्री ने तीन तथा पाच उपयोग होय बे ज्ञान, बे अनान, एक अचक्षु दर्शन चौरिंद्रिय ने छ उपयोग। बे ज्ञान, बे अज्ञान, बे दर्शन मनुष्य ने बार उपयोग पामे ॥

सोलमु सत्तरमु उपजवा चववानी संख्यानु द्वार

नारकी दस भुवनपति व्यतर, योतिषी, वैमानिक, तिर्यंच पचेंद्रि, त्रण्य विकलेंद्री ए अठार दडके एक समय जीव एक, बे, तीन आदि लेई सख्याता तथा असख्याता उपजे, ने सख्याता असख्याता चवे, । पाच थावर । एक समय जीव असख्याता चवे, असख्याता उपजे । साधारण एक समय में अनता उपजे ने अनता चवे । एक समय मनुष्यना जीव एक, बे आदि लेईने सख्याता उपजे ने सख्याता चवे ॥

॥ अठारमु आउखा द्वार कहे छे ॥

समुचे नारकीनु आउखो जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो आउखो तेत्रीस सागरोपमनु । हवे प्रथम नरके जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपमनु । बीजी नरके जघन्य एक सागरोपम नु । उत्कृष्टो तीन सागरोपम नु । त्रीजी नरके जघन्य तीन सागरोपम नु उत्कृष्टो सात सागरोपम नु । चोथी नरके जघन्य सात सागरोपम नु । उत्कृष्टो दस सागरोपम नु । पाचमी नरके जघन्य दस सागरोपम नु । उत्कृष्टो सत्तरा सागरोपम नु । छट्ठी नरके जघन्य सत्तरा सागरोपम नु । उत्कृष्टो बावीस सागरोपमनु

सातमी नरके जघन्य बावीस सागरोपम नु । उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमनु ॥ हवे भुवनपति नी दस जाती तेहना वीस इंद्र तेहना नाम ॥ चमरेंद्र, वलेंद्र, धरणेंद्र, भूतानेंद्र, वेणुदेव, वेणुदाली, हरिकंत, हरिसिंह, अग्निसिंह, अग्निमाणव, पूरण निमिठ, जलकंत, जलप्रभ, अमितगति, मृगवाहन, वेलंब, प्रभंजन, घोस, महाघोस, ते वीस मध्ये चमरेंद्रनी जाती नु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपम नु । चमरेंद्रनी देवीनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो साढाचार पल्योपम नु । वलेंद्रनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक सागरोपम भाभेरु वलेंद्रनी देवीनु जघन्य दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो साढाचार पल्योपम नु । हवे दक्षिण पासाना धरणेंद्र आदि लेई ने नव इंद्र नु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो दोढ पल्योपम नु । ते नव इंद्रनी देवीनु जघन्य आउखो दस हजार वर्षनु । उत्कृष्टो आउखो आढघा पल्योपमनु । तथा उत्तरना पासाना भुतानेंद्र आदि लेईने नव इंद्र नु जघन्य दसहजार वर्षनु । उत्कृष्टो बे पल्योपम देशऊणो । ने उत्तरना पासाना नव इंद्रनी देवी नु जघन्य दसहजार वर्षनु । उत्कृष्टो एक पल्योपम देश ऊणो। पृथ्वीकाय नु जघन्य अंतर मुहूर्त नु । उत्कृष्टो बावीस हजार वर्षनु । तथा वादर पृथ्वीना छ भेद कहे सन्हा गोपीचन्दनादिक ते नु उत्कृष्टो एक हजार

वर्षन्‌ बीजी सुधानामे पृथ्वी ते नदीनी मेखलादिक प्रमुख तेन्‌ आउखो बार हजार वर्ष न्‌ । त्रीजी वालुका नामे पृथ्वी ते सचित रेलु प्रमुख ते न्‌ उत्कृष्टो चवदहजार वर्षन्‌ । चौथी मणसिल नामे पृथ्वी ते सुरमादिक ते न्‌ उत्कृष्टो सोल हजार वर्ष न्‌ । पाचमी शरकरा नामे पृथ्वी ते सुवर्णादिक ते न्‌ उत्कृष्टो अढार हजार वर्षन्‌ । छठ्ठी खर नामे पृथ्वी ते रत्नादिक ते न्‌ । उत्कृष्टो बावीस हजार वर्षन्‌ । पाणी न्‌ उत्कृष्टो सात हजार वर्षन्‌ । अग्नि न्‌ उत्कृष्टो त्रण दिवसन्‌ । वायुकायनो उत्कृष्टो तीन हजार वर्षन्‌ । वनस्पतिन्‌ उत्कृष्टो दस हजार वर्ष न्‌ । बेंद्रीन्‌ बार वर्षन्‌ । तेंद्रीन्‌ उत्कृष्टो ओगणपच्चास दिवसन्‌ । चौरिंद्रीन्‌ उत्कृष्टो छे मासन्‌ । पाच थावरन्‌ त्रण विकलेंद्री ए आठ दडके सर्व जीवन्‌ जघन्य अतर मुहूर्तन्‌ जाणवो । हवे तिर्यंच पचेंद्री ना दस भेद लिखयते ॥ ते मध्ये जलचर गर्भजन्‌ जघन्य अतर मुहूर्तन्‌ं । उत्कृष्टो एक पूर्वकोडी वर्षन्‌ । जलचर समुछिमन्‌ उत्कृष्टो आउखो पूर्वकोडी वर्षन्‌ । थलचर गर्भजन्‌ उत्कृष्टो त्रण पल्योपमन्‌ । समुछिम थलचरन्‌ चौरासी हजार वर्षन्‌ । गर्भज खेचरन्‌ उत्कृष्टो आउखो पल्योपमनु असख्यातमो भाग । समुछिम खेचरन्‌ उत्कृष्टो बहोतेर हजार वर्षन्‌ं । गर्भज उरपरिसर्पन्‌ उत्कृष्टो एक पूर्व-

कोडी वर्षनु । समुर्छिम उरपरिसर्पनु उत्कृष्टो त्रेपन हजार वर्षनु । गर्भज भुजपरिसर्पनु उत्कृष्टो एक पूर्वक्रोडी वर्षनु । समुर्छिम भुजपरिसर्पनु उत्कृष्टो बेतालीस हजार वर्षनु । ए सर्वे उत्कृष्ट आउखो जाणवो ॥ दसभेद तिर्यंचना कह्या ते सर्वनु जघन्य आउखो अंतरमुहूर्तनु छे । गर्भज मनुष्य नु उत्कृष्टो आउखो तीन पल्योपमनु जघन्य अंतर मुहूर्त नु । व्यंतर नु जघन्य दसहजार वर्षनु उत्कृष्टो एक पल्योपम नु । व्यंतरनी देवी नु जघन्य दसहजार वर्षनु उत्कृष्टो अढधा पल्योपमनु । योतिषना पांच भेद कहे छे ॥ चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह, नक्षेत्र, तारा । ते मध्ये चन्द्रमानु जघन्य आउखो पाव पल्योपमनु । उत्कृष्टो एक पल्योपम ने एक लाख वर्षनु । चन्द्रमानी देवीनु उत्कृष्टो अर्धपल्योपम अने पचास हजार वर्ष नु । सूरज नु उत्कृष्टो एक पल्योपम अने हजार वर्षनु । सूर्यनी देवी नु उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम अने पांचसौ वर्षनु । ग्रह नु उत्कृष्टो एक पल्योपम नु । ग्रहनी देवीनु उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम नु । नक्षेत्र नु उत्कृष्टो अर्धा पल्योपम नु । नक्षेत्रनी देवी नु उत्कृष्टो पाव पल्योपम झाझेरो । एक आठे भागे जीवनु जघन्य आउखो पाव पल्योपमनु । तारा नु उत्कृष्टो पाव पल्योपमनु । जघन्य एक पल्योपमनो आठमो भाग । तारानी देवीनु उत्कृष्टो एक पल्योपमनो आठमो भाग झाझेरु जघन्य एक पल्योपमनो आठमेभाग ॥

हवे वैमाणिक देव नु आउखो कहेछे॥ सौधर्म देवलोके जघन्य एक पल्योपम नु । उत्कृष्टो वे सागरोपमनु । ईशान देवलोके जघन्य एक पल्योपम झाझेरु । उत्कृष्टो वे सागरोपम झाझेरु । त्रीजे सनतकुमार देवलोके जघन्य वे सागरोपमनु । उत्कृष्टो सात सागरोपमनु । चौथा महेंद्र देवलोके जघन्य वे सागरोपम झाझेरु । उत्कृष्टो सात सागरोपम झाझेरु । पांचमे ब्रह्म देवलोके जघन्य सात सागरोपमनु । उत्कृष्टो दस सागरोपमनु । छट्ठे लांतक देवलोके जघन्य दस सागरोपमनु । उत्कृष्टो चवद सागरोपमनु । सातमे शुक्र देवलोके जघन्य चवद सागरोप नु । उत्कृष्टो सत्तरा सागरोपमनु । आठमे देवलोके जघन्य सत्तरा सागरोपमनु । उत्कृष्टो अठारा सागरोपम नु । नवमें अनन्त देवलोके जघन्य अठारा सागरोपम नु । उत्कृष्टो ओगणीस सागरोपम नु । दसमे प्रणत देवलोके जघन्य ओगणीस सागरोपम नु । उत्कृष्टो वीस सागरोपमनु । ग्यारमे अरण्य देवलोके जघन्य वीस सागरोपमनु उत्कृष्टो इक्वीस सागरोपमनु । वारमे अच्युत देवलोके जघन्य इकवीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो वावीस सागरोपमनु । प्रथम नव ग्रेवेके जघन्य वावीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो तेवीस सागरोपमनु । वीजे नवग्रेवेके जघन्य तेवीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो चोवीस सागरोपमनु । त्रीजे नवग्रेवेके जघन्य चोवीस सागरोपमनु ।

उत्कृष्टो पचीस सागरोपमनु । चौथे नवग्रेवेके जघन्य पचीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो छन्वीस सागरोपमनु । पाचमे नवग्रेवेके जघन्य छन्वीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो सत्तावीस सागरोपमनु । छनवट्ठे ग्रेवेके जघन्य सत्तावीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो अट्ठावीस सागरोपमनु । सातमे नवग्रेवेके जघन्य अट्ठावीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो ओगणतीस सागरोपमनु । आठमे नवग्रेवेके जघन्य ओगणतीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो तीस सागरोपमनु । नवमे ग्रेवेके जघन्य तीस सागरोपमनु । उत्कृष्टो एकत्रीस सागरोपमनु ॥ विजय, वैजयंत, जयंत अपराजीत ए चार विमाने जघन्य एकत्रीस सागरोपमनु, । उत्कृष्टो तेत्रीस सागरोपमनु । सर्वार्थ सिद्ध जघन्य तथा उत्कृष्टो आउखो तेत्रीस सागरोपम पूरो ॥

॥ हवे ओगणीसमु पर्याप्ती द्वार कहे छे ॥

पर्याप्ती छ ना नाम कहे छे । अहार पर्याप्ती, शरीर पर्याप्ती, इंद्री पर्याप्ती, सासोस्वास पर्याप्ती, भाषा पर्याप्ती, मन पर्याप्ती नारकी दस भुवनपति, व्यंतर, वैमाणिक, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ए सोल दंडके छे पर्याप्ती । पाच थावरने चार पर्याप्ती अहार, शरीर, इंद्री, सासोस्वास ॥ बेंद्री तेंद्री, चौरिंद्री, असनी पचेंद्र ने मन विना पाच पर्याप्ती होय ॥

॥ वीसमु अहार द्वार कहे छे ॥

अहारना त्रण नाम ॥ ओझा अहार, रोम अहार, क्वल अहार। नारकी, दसभुवनपति, व्यंतर, योतीषी, वैमाणिक, पाच थावर ए ओगणीस दंडके ने अहार, ओझा ने रोम ए बे। तिर्यंचपचेंद्री अने मनुष्य ने त्रण विकलेंद्री ए पाच दंडके त्रण अहार पामे ॥

॥ इकीसमु गतागति द्वार कहे छे ॥

नारकी थी चवीने तिर्यंच पचेंद्री अने मनुष्य माहीं जाय अने ए बे माही आवे। दस भुवनपति व्यंतर, योतिषी, वैमाणिक, पहिला बीजा देवलोके गतागति कहेछे। पृथ्वी पाणी, वनस्पती, तिर्यंच पचेंद्री अने मनुष्य ए पाच गति। मनुष्य अने तिर्यंचपचेंद्री ए बे दंडके आगति, त्रीजादेवलोक-थी मांडी आठमा देवलोक सुधी तिर्यंचपचेंद्री अने मनुष्य ए बे दंडकनी गति, एहीज बे दंडकनी आगति, नवमा देवलोकथी मांडी सर्वार्थ सिद्ध सुधी मनुष्य ने आगति। अने मनुष्य ने गति मनुष्य ने चोवीसनी गति, तेउ वाऊ विना बावीस नी आगति, तिर्यंच पचेंद्री चोवीसनी गति अने चोवीसनी आगति, त्रण विकलेंद्री, पाच थावर, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ए दस दंडकनी आगति, एहीज दसनी गति,

नारकी विना तेत्रीस नी आगति, तेऊ वाऊ ने तेगटेवता। नारकी, मनुष्य विना ६ नी गति। अने तेर देवता नारकी विना १० नी आगति छे॥ इति २१ द्वार संपूर्ण॥

॥ हवे बावीसमु वेद द्वार कहे छे ॥

वेद तीनना नाम॥ पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसक वेद। नारकी, पांचथावर, त्रण विकलेंद्री ए नव दंडके एक नपुंसक वेद। तिर्यंच पंचेंद्री, मनुष्यने त्रण वेद। देवताना तेर दंडके स्त्री ने पुरुष ए वेद पामे॥

॥ हवे त्रेवीसमुं भुवन द्वार कहे छे ॥

पहिली नरके त्रीस लाख नरका वासा, बीजी नरके पचीस लाख नरका वासा, त्रीजी नरके पन्नरलाख नरका वासा, चोथी नरक दसलाख नरका वासा, पांचमी नरके त्रणलाख नरका वासा, छट्ठी नरक एक लाख मां पांचऊणा नरका वासा, सातमी नरके पांच लाख नरका वासा सर्व थईने चोरासी लाख नरका वासा जाणवा। तथा दक्षिण ना पासाना दस इंद्रना भुवन कहे छे। चमरेंद्र ने चोत्रीस लाख भुवन, धरणेंद्रने चुमालीस लाख भुवन, वेणुदेवने अटत्रीस लाख भुवन, हरिकंत ने चालीस लाख भुवन, अग्निसिंह ने

चालीस लाख भुवन पूर्णने चालीस लाख भुवन जलस्तने चालीस लाख भुवन, अमितगति ने चालीस लाख भुवन, वलम्बि ने पच्चासलाख भुवन, घोसने चालीस लाख भुवन, दक्षिण पासा ना दस इद्रना चार क्रोडी ने छ लाख भुवन जाणना ॥ हवे उत्तरना दस इद्रना भुवन कहे छे। बलेंद्रने त्रीस लाख भुवन, भुतानंद्र ने चालीस लाख भुवन, वेणुदाली ने चोत्रीस लाख भुवन हरिसिंह ने छत्रीस लाख भुवन, अग्निमानवने छत्रीस लाख भुवन, विसीष्ट ने छत्रीस लाख भुवन, जलप्रभ ने छत्रीस लाख भुवन, मृगावाहण ने छत्रीस लाख भुवन, परभजण ने छियालीस लाख भुवन, महाघोष ने छत्रीस लाख भुवन छे। तेथी उत्तर दिशी ना दस इद्रना भुवन छे ते प्रत्येक चार लाख ओछा जाणना, सर्व थई ने भुवनपतिना भुवन सात क्रोडी ने बहोतेर लाख भुवन। हवे भुवनपतिना भुवन कहे छे। एक लाख अस्सीहजारयोजन रत्नप्रभा पृथ्वीनोपिंडछे। ते मध्ये एक हजार योजन ऊपर मुकिये, हजार योजनहेठा मुकिये, वीचमा एक लाख अठयोतरहजार योजन नी पोहोलाण छे। ते माहें सख्याता असख्याता योजन ना भुवनपतिना भुवन छे। सुक्ष्म पाचथावर तीनविगलेंद्री, तिर्यंच पचेंद्री लोकने देशे देशे छे। मनुष्य, बादरअग्निकाय अढीद्वीपमा छे। व्यतर देवता रत्नप्रभापृथ्वी नो ऊपरलो एक हजार योजन ते मध्ये एकसी

योजन उपर मुक्यिे अने सो योजन नीचे मुक्यिे वीचमें आठसौ योजन माहीं व्यतरना असख्याता नगर छे। ते नगर जघन्य भरतक्षेत्रजेवडाछे। मध्य महाविदेह जेवडा छे, उत्कृष्टा जबूद्वीप जेवडा छे, योतिषी ना विमान असख्याता छे सम तला पृथ्वी थी माडीने सातसो ने नेवु योजन तारा छे, ते उपर दस योजन सूर्य छे, ते उपर अस्सी योजन चन्द्रमा छ, ते ऊपर चार योजन नक्षत्र छे, ते ऊपर चार योजन बुधछे, ते ऊपर त्रण योजन शुक्र छे, ते ऊपर त्रण योजन गुरु छे, तेऊपर त्रण योजन मगल छे, ते ऊपर त्रण योजन शनीश्वर छे। हवे वैमानिक ना विमाननी सख्या कहे छे। सौधर्म देवलोके बत्रीस लाख विमान छे, ईशान देवलोके अट्ठावीस लाख विमानछे, सनत्कुमार देवलोके बारलाख विमान छे, महेंद्र देवलोके आठ लाख विमान छे, ब्रह्मदेवलोके चारलाख विमानछे, लातक देवलोके पचास हजार विमान छे, शुक्र देवलोके चालीस हजार विमान छे, महस्रा देवलोके छ हजार विमानछे, आनत प्राणत देवलोके चारसौ विमान छे, अरणय अच्युतने तीनसौ विमान छे, नवग्रैवेक माही प्रथम त्रीके एकसौ ग्यारा विमानछे, बीजे त्रीके एक सौ सात विमान छे त्रीजे त्रीके सौ विमान छे ते ऊपर अनुत्तर विमान पाच छे, ते उपर बारयोजन सिद्धसिलाछे।

॥ हवे चोवीसमु प्राण द्वार कहे छे ॥

हवे दस प्राणना नाम कहे छे। पाच इद्री, त्रण बल, सासोस्वास, आउखो ए दस प्राण छे। नारकी तेर देवता, मनुष्य तिर्यच पचेंद्री ए सोल दडके दस प्राण, पाच थावर ने चार प्राण फरसइद्री कायबल, सासोस्वास, आउखो, बेंद्री ने ६ प्राण। फरसेंद्री, रसेंद्री, वचनबल, कायबल, सासोस्वास, आउखो। तेंद्रीने सातप्राण नाक सहित करिये छे। चोरिंद्री ने आठ प्राण आख सहित करिये छे ॥

॥ हवे पचवीसमु सपदा द्वार कहे छे ॥

सपदा तेवीस ना नाम। चक्ररत्न, छत्ररत्न, दडरत्न, खडगरत्न, कागणीरत्न, चर्मरत्न, मणीरत्न, ए सात एकेंद्री रत्न छे। गाथापति, सेनापति, पुरोहित, वाधिक, अश्वरत्न, गजरत्न, स्त्रीरत्न ए सात पचेंद्री। तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासदेव, केवली, साधु, श्रावक, सम्यक्त्व द्रष्टी, मडलिक-राजा ए नव निधान प्रथम नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न विना सोल सपदा पामे। बीजी नरकनो निक-ल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न चक्रवर्ती विना पनर सपदापामे त्रीजी नरकनो निकल्यो जीव सात एकेंद्री चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, विना तेर सपदा पामे। चोथी नरकनो निकल्यो

जीव तर्थंकर विना बार सपदा पामे। पाचमी नरकनो निकल्यो जीव केवली विना च्यार सपदा पामे। छट्ठी नरकनो निकल्यो जीव दस सपदा पामे साधु विना सातमी नरकनो निकल्यो जीव त्रण सपदा पामे। अश्व, गज, समकित ये तीन ॥ दस भुवनपति, व्यतर, योतिषी ए बार दंडकनो निकल्यो जीव तिर्थंकर वासुदेव विना एकवीस सपदा पामे। पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ए पाच दंडकनो निकल्यो जीव तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव विना ओगणीस सपदा पामे। तेउ, वाउ, नो निकल्यो जीव सात रत्न एकेंद्री अश्व, गज, सहित नव सपदा पामे। त्रण विकलेंद्री नो निकल्यो जीव तिर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, केवली विना अठार सपदा पामे। वैमाणिक मा प्रथम देवलोक अने बीजा देवलोक नो निकल्यो जीव तेवीस सपदा पामे बीजा देव लोकथी माडी आठमा देवलोक सुधी नो निकल्यो जीव सात एकेंद्री रत्न विना सोल सपदा पाम। नवमा देवलोकथी माडी नव ग्रवेक सुधीनो निकल्यो जीव जान एकेंद्री, अश्व, गज विना चवद सपदा पामे। पाच अनुत्तर विमान नो निकल्यो जीव वासुदेव विना आठ निधान पाम ॥

॥ हवे छव्वीसमुं धर्म द्वार कहे छे ॥

तिर्यंच पचेंद्री, मनुष्य ने करणी रूपी धर्म छे बावीस दंडके करणी रूपी धर्म नथी ॥

॥ सत्तावीसमुं योनी द्वार कहे छे ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदलाख साधारण वनस्पति काय, बे लाख बेंद्री, बे लाख तेंद्री, बे लाख चौरिंद्री नारकीनी चार लाख योनि, चार लाख तिर्यंच पचेंद्री नी, चार लाख देवतानी, चौद लाख मनुष्य नी ए चोरासी लाख जीवा योनी थई ॥

॥ हवे अट्ठावीसमुं कुल कोटी द्वार कहे छे ॥

नारकीनी पचीस लाख कुल कोटी, देवतानी छव्वीस-लाख कुल कोटी, पृथ्वीनी बार लाख कुल कोटी, पाणी नी सात लाख कुल कोटी, अग्निनी तीन लाख कुल कोटी, वाउ नी सातलाख कुल कोटी, वनस्पतिनी अट्ठावीस लाख कुलकोटी, बेंद्री नी सात लाख कुल कोटी, तेंद्रीनी आठ लाख कुल कोटी, चौरिद्रीनी नव लाख कुल कोटी, मनुष्यनी बार लाख कुल कोटी, तिर्यंचपचेंद्री ना पांच भेद ॥ जलचर

नी माडीबार लाख कुल कोटी, थलचर नी दस लाख कुल कोटी, खेचर नी बारलाख कुल कोटी उरपरि सर्पनी दस लाख कुल कोटी, भुजपरिसर्प नी नव लाख कुल कोटी सर्व एक क्रोड अने साडीसत्ताणु लाख कुल क्रोटी जाणवी ॥

॥ हवे ओगणत्रीसमुँ अल्प बहुत्व द्वार कहे छे ॥

सर्वथी गर्भज मनुष्य थोडा, तेथी बादर अग्नि ना जीव असंख्याता गुणा अधिक, तेथी वैमाणिक ना जीव असंख्याता गुणा अधिक, तेथी नारकी ना जीव असंख्याता गुणा अधिक। तेथी व्यंतर ना जीव असंख्याता गुणा ? अधिक, तेथी ज्योतिषना जीव असंख्याता गुणा अधिक। तेथी चौरिंद्री ना जीव असंख्याता गुणा अधिक तेथी पंचेंद्री ना जीव विशेषाधिक, तेथी बेंद्री विशेषाधिक, तेथी तेंद्री ना जीव विशेषाधिक, पृथ्वीकायना जीव असंख्याता गुणाधिक तेथी वाउ कायना जीव असंख्याता गुणाधिक तेथी अप्पकाय ना जीव असंख्याता गुणा अधिक तेथी वन स्पति काय ना जीव अनंत गुणा अधिक होय।

॥ इति ओगणत्रीस द्वार संपूर्ण ॥



अथ मिथ्यात्व गुणठाणानि स्थिती कहे छे ॥

अभवि आसरी अनादि अनत, भवि आसरी अनादी सात। पडवी आसरी सादी सात। मिथ्यात्व गुणठाणानो लक्षण कहे छे॥ जेम कोई माणस धतूरानु बीज खाधू होय तेम ते सफेद वस्तू ने पीली वस्तू देखे तेमते मिथ्यात्व गुणठाणा वालो छे। ते सुदेवने कुदेव माने सुगुरू ने कुगुरू माने अने जे हिंसा धर्म छे तेने अहिंसा माने। तेम बधु विपरीत माने त्यारे कोई तरक करे छे के तेनामा एक गुण नथी त्यारे तेने मिथ्यात्व भूमि स्थल कहिये, तो सामो माणस कहे, के सर्व जीवो ने अक्षरनो अनतमो भाग उघाडो छे सर्व ने आठ रुचक प्रदेश छे तेमा भविने निर्मल होय। अभविने झाखा होय। माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणो कहिये, त्यारे सामो तर्क करे छे, के कोई दिवस मोक्ष जसे कारके हा भवि हसे तो कोईकनार समकित पामी मोक्ष हेतूनी क्रेया करी मोक्षे जसे। माटे तेने मिथ्यात्व गुणठाणु कहिये।

॥ हवे सास्वादन गुणठाणा नु लक्षण कहे छे ॥

जघन्य उत्कृष्टी छ आवलिकानी स्थिती। सास्वादन गुणठाणु मिथ्यात्वथी अनत गुणो विशुद्ध ने मिश्रथी अनतगुणो हीन तेमाथी नपुंसक

वेदने मिथ्यात्व मोहनी ते प्रकृति गई तेथी करीने विशुद्ध थयु। जेम कोई माणसे खीर खाधी होय अने पछी वमी नाखे पण तेनु स्वाद जाय नहीं। हवे मिश्र गुणठाणानी स्थिती कहे छे॥ जघन्य एक समय उत्कृष्टी अंतर मुहूर्तनी होय। सास्वादनथी अनंत गुणो विशुद्ध ने अविरती थी अनंत गुणो हीन, तेमाथी अनतानु बंधी चोकडीने स्त्री वेद ए पांच प्रकृती गई। तेथी विशुद्ध थयो।

॥ हवे मिश्र गुणठाणा नु लक्षण कहे छे ॥

समकितने मिथ्यात्व बे मलीने मिश्रथाय मिश्र गुणठाणा वालाने जैनधर्म उपर राग नथी द्वेश पण नथी। फरी आवेतो अंतर मुहूर्त सुधी रहे ॥ ४ ॥

हवे चोथु अविरती गुणठाणानी स्थिती कहे छे.

जघन्य अंतर मुहूर्तनी ने उत्कृष्टी तत्रीस सागरोपमनी, ने मिश्रथी अनंत गुणो विशुद्ध, ने देश विरतीथी हीण तेमाथी अनंतानु बंधी चोकडी, न ग्रण माहनी, ए सात प्रकृति जाय ने अविरती गुणठाणे वरतता त्रण प्रकारे जीव छे एक जीव जाणे छ आदरता नथी, ने पालता नथी, ते श्रेणिक राजानी पेठे जाणवो, एकवार जाणे छे आदरे छे ने पालतो नथी ते संता आनंद जाणवा, एक जीव जाणे छे आदरतो

नथी ने पाले छे ते अनुत्तर वैमान ना देवता जाणवा ॥५॥

हवे पाचमां देशविरती गुणठाणानी स्थिति कहे छे

जघन्य अंतर मुहूर्त ने उत्कृष्टी देश उणी पूर्व कोटी वर्षनी, हवे अविरती गुणठाणाथी अनंत गुणो विशुद्धने प्रमत्तथी हीन, तेमाथी बीजा कषायनी चोकडी गई तेथी विशुद्ध थयो, हवे तेहनो लक्षण कहे छे देशविरती गुण ठाणे वर्ततो जीव नोकारसीथी माडी ने बार व्रत उचरे, पण देश करी उणो तेमाथो सर्व विरती गुण उणो छे ॥ ६ ॥

॥ हवे छठ्ठ प्रमत्त गुणठाणानो स्थिती कहे छे ॥

जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व क्रोटी वर्षनी देशविरतीथो अनंत गुणो विशुद्ध, ने अप्रमत्तथी हीण तेमाथी त्रीजा कषायनी चौकडी गई तेथी करीने विशुद्ध थयो। हवे तेनो लक्षण कहे छे ॥ प्रमत्त गुणठाणा वालो पाच प्रमादे करीने सहित छे तेथा तेना अध्यवसाय पण मलीन छे तेनु चारित्र पण मलीन छे ॥ ७ ॥

॥ हवे अप्रमत्त गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥

जघन्य अंतर मुहूर्तनी ने उत्कृष्टी देशे उणी पूर्व क्रोटी वर्षनी हवे प्रमत्तथी अनंत गुणो विशुद्ध ने अपूर्व करणथी अनंत गुणो हीण ने तेमाथी सोरुने अरति गई, हवे तेनो लक्षण

कहेले के अप्रमत्त गुणठाणा वालो पाच प्रमादे करी रहित होय तेथी तेना चारित्र पण निर्मल होय ते तेना अध्यवसाय पण निर्मल होय ॥ ८ ॥

हवे अपूर्व करण गुणठाणानी स्थिती कहे छे

जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर मुहूर्तनी, ह अप्रमत्तथी अनंत गुणो विशुद्ध ने अनिवृत्ती बादर गुणठाणाथी अनंत गुण हीन तेमां थी भय शोक हास्य गई तेथी विशुद्ध थयो। हवे तेनो लक्षण कहे छे अपूर्व करण गुणठाणे वर्तता जीव त्रण करण करे छे यथा प्रवृत्तिकरण अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण समय समयमे पल्योपमनो असंख्यातमो भाग खपावतो खपावतो पाच वाना करे, स्थिति घातरस, घातगुण, संक्रमणगुण, श्रेणी, अपूर्वबंध ए पाच वाना तेज करतो २, अंतर मुहूर्तमा ते यथाप्रवृति करण करे समय समयमां पाच वाना खपावतो अंतर मुहूर्तमा यथा प्रवृति करण थी, अनंत गुणो विशुद्ध अपूर्व करण कर समय समयमा पाच वाना खपातो अंतर मुहूर्त अपूर्व करण थी अनंतगुण विशुद्ध अनिवृति करण करे, त्या आयु कर्म वर्जीने साते २ कर्मनी स्थिती खपावीने, एक कोडा कोडी लाग ने ऊंणे त्यारे ग्रंथी भेद थाय, ग्रंथी भेद ते शु अनादी

कालनी राग द्वेषनी गाठ भेदी नाखीयेते । हवे अपूर्व गुण ठाणु नाम थयो के कोई दिवस पाम्यो नथी, ते नवु शु पाम्यो तोके समकित पाम्यो ॥ ९ ॥

हवे अनिवृति बादर गुणठाणानी स्थिती कहे छे

जघ य एक समय, उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी । हवे ते अपूर्व करण थी अनत गुणो विशुद्ध अने सुक्ष्म सपराय थी हीण, ते माथी सजलना लोभ विना त्रिक ने पुरुष वेद गयो । हवे तेनो लक्षण कहे छे श्रेणिपर चढता सर्व जीवना अध्यवसाय सरखा होय छे । जरा पण फेरफार नथी, करीने अनिवृति थयो ॥ १० ॥

हवे सुक्ष्म सपराय गुणठाणानी स्थिती कहे छे

जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्तनी, हवे अनिवृति बादर गुणठाणाथी अनतगुण विशुद्ध, ने उपशान्त मोहनीथी हीण, तेमाथी सजलनो लोभ घणो जाडो हतो ते सुक्ष्म मात्र रह्य

हवे उपशातमोहनी गुणठाणानी स्थिती कहेछे

जघन्य एक समय नी, उत्कृष्टी एक मुहर्त ते सुक्ष्म गुण ठाणा थी अनत गुणो विशुद्ध, ने क्षीण मोहनी थी हीण, तेमा थी मोहनी कर्मनी प्रकृति उपसमावी राखी छे । केवी

रीते के कादव नाला पाणी माहे राडव वेगी गयो छे। पण जो कोइक माणस अन्दर पगमूके तो वधो राडव उपर आवी जाय। तेरा रीते उप समानी रासी छे॥ १२॥

॥ हवे क्षीण मोहगुणठाणानी स्थिती कहेछे ॥

जघन्य एक समय, ने उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी। उपशा त मोहनी गुण ठाणाथी अनन्तगुण विशुद्ध ते सजोगी थी हीण तेमाहे थी मोहनी कर्म खपाव्यो। हवे तेनो लक्षण कहे छे। जारे मोहनी कर्मनो क्षय थयो। त्यारे यथाख्यात चारित्रनी प्राप्ति थई। जेम कोई माणस समुद्रमा तरवाने पड्यो। तेने तरता २ थाक लाग्यो। त्यारे द्वीप ऊपर वेसीने, विसामो खाय छे। ने एम विचारे छे आ थोडु पाणी छे। तेने हम णा तरी जइश, तेम आ ससार समुद्रने विषे तरता ७ थाक लाग्यो, त्यारे यथाख्यात चारित्र रूपी द्वीप मल्यो। त्या वेसीने विसामो खाय छे, ने एम विचार छे, के म्हारे हवे थोडो ससार छे, ते हमणा तरी जइश॥ १३॥

॥ हवे सजोगी गुणठाणानी स्थिती कहेछे ॥

जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी देशे उणी पूर्वकोडी वर्षनी। हवे तेनो लक्षण कहेछे। तिहा चारे घातिया कर्मनो क्षय कर्यो। मन वचन कायाना जोग मोकला छे,

हाले छे, चाले छे, देशना आपे छे ॥ १४ ॥

॥ हवे अजोगी गुणठाणानी स्थिती कहे छे ॥

पाच लगु अक्षर

नी थ इ उ ऋ लृ अघाती कर्मनो दाय करनो । मन वचन कायाना योग रूधे । सेलेशी करण करे ॥ सम्पूर्ण ॥

॥ १४ गुणठाणा द्वार लिख्यते ॥

ते चवद गुणठाणा उपर चालसे, ते गुणठाणा चवद समवायागजी सूत्र माही कहया छे । पचीस द्वारना नाम कहे छे । नामद्वार १, लक्षणद्वार २, स्थितीद्वार ३, क्रियाद्वार ४, सत्ताद्वार ५, बधद्वार ६, उदेद्वार ७, उदीरणाद्वार ८, निर्भराद्वार ९, भावद्वार १०, कारणद्वार ११, परीमाद्वार १२, आत्माद्वार १३, जीवनाभेद द्वार १४, गुणठाणा द्वार १५, योगद्वार १६, उपयोगद्वार १७, लेश्याद्वार १८, हेतुद्वार १९, मार्गणाद्वार २०, ध्यानद्वार २१, जीवायोनीद्वार २२, दंडकद्वार २३, सनतनिरतुद्वार २४, अल्पीबहुत्व द्वार २५ ॥

॥ हवे नामद्वार कहे छे ॥

पहिलो मिथ्यात्व गुणठाणो, बीजो सास्वादन गुणठाणो, त्रीजो मिश्र गुणठाणो, चौथो अव्रती समकितदृष्टी गुण-

ठाणो पाचमो देशव्रती गुणठाणो, छट्ठोप्रमत्त गुणठाणो सातमो अप्रमत्त गुणठाणो, आठमो अपूर्व गुणठाणो, नवमो अनिवृत्ती बादर गुणठाणो, दसमो सुक्ष्म संपराय गुणठाणो इग्यारमो उपशांत मोह गुणठाणो, बारमो क्षीणमोह गुणठाणो, तेरमो सयोगी गुणठाणो, चवदमो अयोगीगुणठाणो

॥ हवे लक्षण द्वार लिख्यते ॥

पहिलो मिथ्यात्व गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।

श्रीवीतराग निवार्ण अधिक ओछो प्ररूपे । विपरीत सरदे, जिन धर्म उपर दुष्ट भाव राखे, कुदेव, कुगुरू, परिणाम कुधर्म कुशास्त्र ४ बोल ऊपर आस्ता राखे । तेहने मिथ्यात्व गुणठाणो कहिये छ । त्यारे श्रीगोतमस्वामीजी हाथ जोडी मानमोडी विनय नमस्कार करी । श्री भगवत ने पूछता हवा, स्वामीनाथ एहने शु गुण निपन्यो, त्यार श्री भगवत दयनी बोल्या अहो गोतम गुण ए निपन्यो जीवरूपी दडा, कर्मरूपी ल कडी, चारगतिने चोवीस दडके भमे पण शातानो ठिकाणो नथा । हवे दुसरा सास्वादन गुणठाणानो लक्षण कहे छ । तेहनो दृष्टांत कहे छे । जेम कोईक मनुष्य खीर खांडनो भोजन जीम्यो हतो । ते समान तो समकित, पाछो वमन पूछे फिरो त्यारे कोई पुरष तु काई जीम्यो त्यारे कह्यो

खीरनो स्वाद रह्यो, ते समान सास्वादन समकित । बीजो दृष्टांत घटानो नाद, पहिलें तो गहिर गंभीर शब्द निकलें ते समान तो समकित, पाछो रणकारो रहिगयो, ते समान सास्वादन गुणठाणो । त्रीजो दृष्टांत जीव रूपी आंबो, अने परिणाम रूपी डाल, समकित रूपी फल, परिणाम रूपी डाली थी समकित रूपी फल । टुटो ते मिथ्यात्व रूपी धरती त्यां आव्यो तेहने सास्वादन गुणठाणो कहिये । त्यारे श्री गोतमस्वामीजी पूछता हुआ कि स्वामिनाथ एहने शु गुण निपन्यो, त्यारे श्री भगवतनी बोल्या । अहो गोतम गुण ए निपन्यो, कृष्णपक्षनो शुक्ल पक्ष थयों, अर्ध पुद्गल भोगवानो रह्यो । अर्धा रुपयानोदृष्टांत जेम कोई पुरुष क्रोड रुपयानो देवनार हतो । ते नवाणु लाख नवाणु हजार नवसों माडानवाणुं दीधा अर्धोरुपयो रह्यो ।

हवे त्रीजा गुणठाणानो लक्षण कहे छे

हवे त्रीजा गुणठाणानो लक्षण कहे छे । त्रीजो मिश्र गुणठाणो तेहनो दृष्टांत जेहवो श्रीखंडनो स्वाद मिठा समान तो समकित, अने खाटा समान मिथ्यात्व । अथवा अनादि काल नो उलटो हतो, तेहनो सुलटो थयो समकित सामो बैठो पण पग भरवा समर्थ नहीं । तेहने

मिश्रगुणठाणो कहिये । त्यारे श्री गोतमस्वामीजी पूछता हवा । स्वामिनाथ एहने शु गुण निपन्यो । त्यारे स्वामिनाथ बोलया, गुण एह निपन्यो, अनादि कालनो कृष्ण पक्षी हतो तेहनो शुक्ल पक्षी थयो । अर्ध पुद्गल भोगवनार रह्यो । अधेलीनो दृष्टांत जाणवो ।

हवे चौथा गुणठाणानो लक्षण कहे छे ।

तेहनी प्रकृति [७] अनुतानुबाध्यो क्रोध१, मान२, माया ३, लोभ ४, मिथ्यात्व मोहिनी५, मिश्र मोहनी ६, समक्ति मोहनी७, तेहना भागा नव, पहिले भागे आगली ४ प्रकृति खपावे ३ प्रकृति उपसमावे, तेहने क्षयोउपसमसक्ति कहिये । बीजेभागे आगली५ प्रकृति खपावे, २ प्रकृति उपसमावे तेहने खयोपसम समक्ति कहिये । त्रीजे भागे आगली ६ प्रकृति खपावे १ उपसमावे तेहने उपसमसक्ति कहिये । चौथे भागे आगली ४ प्रकृति खपावे २ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने क्षयोपसम वेदक समक्ति कहिये । पाचमे भाग आगली ५ प्रकृति खपावे १ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने खयोपसम वेदक समकित कहिये । छट्ठे भाग आगली ६ प्रकृति उपसमावे १ प्रकृति वेदें तेहने उपसम वेदक समक्ति कहिये । सातमें भागे आगली ६ प्रकृति खपावे १ प्रकृति वेदें तेहने क्षायक वेदक समक्ति कहिये ।

आठमें भागे प्रकृति ७ उपसमावे तेहने उपसम समकित कहिये । नवमें भागे ७ प्रकृति खपावे तेहने खायक समकित कहिये । त्यारे चौथे गुणठाणे थाने जिवादिक नव पदार्थनो जाण होवे । द्रव्यथकी १, खेत्रथकी २, काल थकी ३, भावथकी ४, नोकारसी आदि देई वरसी तप मरदयो । त्यारे श्री गोतमस्वामी पूछता हवा स्वामिनाथ एहनो शु गुण निपन्यो त्यारे श्रीभगवत देवजी बोल्या, अहो गोतम गुण ए निपन्यो नरक गतिनु आउखो १, तिर्यंच गतिनु आउखो २, स्त्री वेद ३, नपुसक वेद ४ भुवनपतिनो ५ योतिषी नो ६ व्यंतर नु आउखो ७ ए सात समकितधारी नवु न बांधे ॥ ४ ॥

हवे पाचमु देशवृती गुणठाणा नो लक्षण कहे छे

पाचमो देशव्रती गुण ठाणो तेहनीप्रकृति अग्यारह साततो पहिले कही ते । अने प्रत्याख्यानवरणी क्रोध १, मान२, माया३, लोभ४, एम११ प्रकृति खयोपसम करे त्यारे पाचमु गुणठाणेआवे जीवादिक नव द्रव्य थकी४ नोकारसी आदि देई वरसी तप सरदनो शक्ति परिणामें करे । त्यारे श्रीगोतमस्वामी पूछता हवा हे भगवत शु गुण निपन्यो भगवत कहता हवा गुण ए निपन्यो जघन्य तो त्रीजे भवे मोक्ष जाय उत्कृष्टो सात आठ भव करी मोक्ष जाय ।

॥ हवे छट्ठो गुणठाणानो लत्तण कहे छे ॥

तेहनी प्रकृति १५ इग्यारे आगल कही ते, अने अप्रत्याख्यानी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, एम १५, प्रकृति क्षयोपसम करे त्यारे छट्ठे गुणठाणे आवे जीवादिक नवपदार्थ नो जाण होने द्रव्य थकी जावजीव थंरी। नोंका रसी आदि देइ वरसी तप सरदवो। शक्ति प्रमाणे करवो त्यारे श्रीगोतमश्वामी पहला हुवा। एनो गुण गु निपन्या एहनो गुण ए निपन्यो जघन्यतो एहीजभवे मोक्ष जाय, उत्कृष्टो सात आठ भव करी मोक्ष जाय।

॥ हवे सात मा गुणटाणानो लत्तण कहे छे ॥

प्रकृति १५ आगल कहीते। क्षयोपसम एटलो विशेष मद विष कषाय निद्रा विगहा ए पांच मयी प्रमाद जीव पडती ससारे ए पाच प्रमाद छाडे। त्यार सातमें गुणठाये आवे जीवादिक नव पदार्थनो जाण नोका रसी देइ वरसी तप करे त्यारे श्री गोतमश्वामी पूछता हुवा। उत्तर जघन्य एहीज भवे मोक्ष जाय। अथवा सात आठ भवकरी मोक्ष जावे।

॥ हवे आठमु गुणठाणानु लत्तण कहे छे ॥

अपूर्व करणने शुक्लध्यान आवे त्यारे आठमें गुणठाखे

श्रावे । तिहा श्रेणी बे । एक उपसम श्रेणी, बीजी क्षायक श्रेणी, हवे उपसम श्रेणीना लक्षण कहेछे, तेहनी प्रकृति २१, तेएम १५ आगल कही ते अने हास्य १, रती २, अरति ३, भय ४, सोग ५, दुगछा ६, एम २१ प्रकृति उपसमावे त्यारे नवमें गुणठाणे आवे ।

॥ हवे दसमु गुणठाणा नो लक्षण कहे छे ॥

तेहनी प्रकृति २७ तेएम २१ तो आगल कही ते अने स्त्री वेद १, पुरुष वेद २, नपुसक वेद ३, सजलनो क्रोध १, मान २, माया ३, एम २७ प्रकृति उपसमावे । त्यारे दसमें गुणठाण आवे । तिहा काल करे तो ४ अनुत्तरविमान माहीज जावे । काल नहीं करे तो सजलनो लोभ हतो ते उपसमावीने इग्यारमें गुणठाणे आवे । तिहा काल करे तो सर्वार्थ सिद्धी जाय । काल न करे तो पाछो लथडातो इग्यारमानो दसमें, तथा नवमें, तथा चौथे, तथा पहिले गुणठाणे आवे । त्यारे श्री गोतमस्वामी पूछता हवा । ए पाछो पड्यो ते स्या थकी । श्री भगवतदेवजी बोल्या, ए मोहनी कर्म सजलनो लोभ उपसमायो हतो ते पाछो प्रजल्यो । अग्नि दृष्टाते, जेम अग्नि माहे इंधन नाख्या आव्या सेनी ज्वाला उठे तेम मोहनी कर्म उपसमाव्यो हतो ते पाछो प्रजल्यो ।

॥ हवे चायक श्रेणीना लचण कहे छे ॥

वेहीज २१ प्रकृति खपावे तो नवमे गुणठाणे आवे वेहिज २७ प्रकृति खपावे, तो दसमें गुणठाणे आवे, इहा सञ्जलनो लोभ हतो ते खपावीने, इग्यामु गुणठाणो उलांगी ने बारमें गुणठाणें आवे। तिहा घणघातिया कर्म ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, अतराय ३, एतीन कर्म खपावीने तेरमें गुणठाणे आवे तिहा १० बोल नी प्राप्ती होवे, दान लब्दी १, लाभ लब्दी २, भोग लब्दी ३, उप भोग लब्दी ४, वीर्य लब्दी ५, केवलज्ञान लब्दी ६, केवल-दर्शन लब्दी ७, चायक समकित लब्दी ८, यथारूयात चारित्र लब्दी ९, शुक्लध्यान लब्दी १०, एम १० बोल सहित १४ गुणठाणे आवे। इहा चारी अघ्यात्मकर्म चय करीने निर्वाण जाय ॥ इति लघण द्वार सम्पूर्ण ॥ २१ ॥

॥ हवे स्थिती द्वार लिखते ॥

पहिला गुणठाणानी स्थिती तीन प्रकारनी। अभवी आसरी अनादी अनत। भवी आसरी अनादी सान्त। पड-धाई समदृष्टि जाणवो तेहनी स्थिती जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्टी अर्ध पुद्गल देश उणी १, बीजा गुणठाणानी स्थिती जघन्य १ समय उत्कृष्टि ६ आवलिकानी स्थिती। त्रीजा

गुणठाणानी स्थिती जघन्य उत्कृष्टि अन्तर मुहूर्तनी । चौथा गुणठाणानी स्थिती जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्टी ३३ सागरोपम झाझेरी । पाचमा, छट्ठा, तेरमा, गुणठाणानी स्थिती जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टी १ क्रोडी पूर्व देश उणी । सातमा गुणठाणासु माडीने इग्यारमा गुणठाणा सुधी । जघन्य एक समय उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्त, बारमा गुणठाणा नी स्थिती जघन्य उत्कृष्टी अन्तर मुहूर्तनी, चवदमा गुणठाणानी स्थिती पाच लघु अक्षरनी । अ, इ, उ ऋ, लृ, । इति स्थिती द्वार संपूर्ण ॥ ३ ॥

॥ हवे क्रियाद्वार लिख्यते ॥

मूल क्रिया ५ मिथ्यात्वकी १ अप्रत्याख्यानी २ परिग्रिया ३ आरंभिया ४ मायावतिया ५ पहिले गुणठाणे क्रिया पाच लागे । बीजे तीजे चौथे गुणठाणे क्रिया ४ लागे मिथ्यात्व न लागे पाचमें गुणठाणे क्रिया ३ लागे अपच्चखाण नी न लागे । छट्ठे गुणठाणे क्रिया २ लागे परिग्रह न लागे । सातमा गुणठाणासु माडीने दसमागुणठाणा सुधी १ मायावतीया लागे । इग्यारमें बारमें तेरमें गुणठाणे १ इरियावहियानी क्रिया लागे । पहिले समय लागे । बीजे समय वेदे, त्रीजे समय निर्झरे चवदमें गुणठाणे क्रिया न लागे । इति क्रियाद्वार सपूर्ण ॥ ४ ॥

हवे सत्ताद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणासु माडीने इग्यारमा गुणठाणा सुधी आठकर्म नीसत्ता बारमा गुणठाणे सात कर्मनी सत्ता मोहनी नथी तेरमें चवदमें गुणठाणे ४ अघातिया कर्मनी सत्ता वेदनी १, आयु २, नाम ३, गोत्र ४, इतिसत्ताद्वार सपूर्ण ॥

॥ अथ बंधद्वार लिख्यते ॥

पहिला गुणठाणा सु माडीने, त्रीजो गुणठाणो वरजी, ने, सातमा गुणठाणासुधी आठ कर्म बाधे, तथा सात बांधे तो आयु न बांधे त्रीजे आठमें नवमें गुणठाणे ७ कर्म बाधे, आयु न बाधे, दसमें गुणठाणे ६ कर्म बांधे मोहनी न बाधे इग्यारमें बारमें तेरमें गुणठाणे १ साता वेदनी बांधे चवदमें गुणठाणे अबंध । इति बंध द्वार सपूर्ण ॥ ६ ॥

हवे उदेद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणाथी माडीने दसमा गुणठाणा सुधी आठ कर्म नो उदे, इग्यारमें बारमें गुणठाणे सात कर्म नो उदे मोहनी नथी, तेरमें चवदमें गुणठाणे चार अघात्या कर्मनो उदे । इति उदे द्वार सपूर्ण ॥

हवे उदीरणाद्वार लिख्यते ।

पहिला गुणठाणा थी माडीने त्रीजे गुणठाणो वरजी, छट्ठा गुणठाणा सुधी आठ कर्म नी उदीरणा, अथवा सात

कर्म नी उदीरणा आयु वर्ज्यो, त्रीजे गुणठाणे आठ कर्मनी उदीरणा सातमें आठमें नवमें ६ कर्म नी उदीरणा, आयु, वेदनी, ए वेने वरजी, दसमें गुणठाणे ६ कर्मनी उदीरणा ॥ एहीज उदीरतो मोहनी वरजी इग्यारमें गुणठाणे ५ उदीरतो एहीज बारमें गुणठाणे ५ उदीरतो एहीज अथवा २ उदीरतो नाम १ गोत्र २ तेरमें गुणठाणे २ उदीरतो नाम गोत्र २ उदीरे नहीं। चवदमें गुणठाणे उदीरणा नथी। इति उदीरणाद्वार सपूर्ण।

॥ हवे निर्झरा द्वार लिख्यते ॥

पहिला गुणठाणासु माडीने दसमा गुणठाणा सुधी आठ कर्मनी निर्झरा इग्यारमें बारमें गुणठाण ७ कर्मनी निर्झरा मोहनी वरजी तेरमें चवदमें गुणठाणे ४ अघात्या कर्मनी निर्झरा। इति निर्झराद्वार सपूर्ण ॥

हवे भावद्वार लिख्यते।

मूल भाव पाच उदइक १ उपसम २ क्षयोपसम ३ क्षायक ४ परिणामिक ५ हवे पहिले बीजे त्रीजे गुणठाणे भाव ३ लाभे उदइक १ उपसम २ क्षयोपसम ३ चौथागुणठाणासु मांडी इग्यारमा गणठाणा सुधी भाव चार लाभे बारमें गुणठाणे भाव ४ लाभे। उपसम वरज्यो तेरमें चवदमें

गुणठाणे भाव ३ लाभे उदइक भाव १ चायक २ परिणामिक मिद्ध में भाव २ लाभे। चायक १ परिणामिक २। इति भावद्वार सपूर्ण ॥

हवे कारण द्वार लिख्यते ।

कारण ५ मिथ्यात्व १ अव्रत २ प्रमाद ३ कषाय ४ अशुभजोग ५ पहिले गुणठाणे कारण ५ लागे। त्रीजे गुणठाणे, बीजे गुणठाणे, चौथे गुणठाण, चार कारण लागे मिथ्यात्व न रयो पांचमें छट्ठे गुणठाणे कारण ३ लागे। अव्रत टल्यो सातमा गुणठाणासु मांडी दसमां गुणठाणा सुधी कारण २ लागे। प्रमाद टल्यो। इग्यारमें बारमें तेरमें गुणठाणे कारण १ जोग लागे। चवदमें गुणठाणे कारण नथी। इति कारण द्वार सपूर्ण।

॥ हवे परिसा द्वार लिख्यते ॥

क्षुधापरिसा १ पिवासा परिसा २ सीत परिसा ३ उष्ण परिसा ४ डस परिसा ५ अचेल परिसा ६ रतिपरीसा ७ स्त्री परीसा ८ चरिया परीसा ९ नीसिया परिसा १० सज्झा परीसा ११ आक्रोस परीसा १२ वध परीसा १३ जायणा परीसा १४ अलाभ परीसा १५ रोग परीसा १६ तणफासा परीसा १७ मल परीसा १८ सत्कार परीसा १९ अज्ञान परीसा

२० अज्ञान परीसा २१ दर्शन परीसा २२। चारित्र कर्म थकी परीसा उपजे ज्ञानावरणी कर्म ॥२२॥ परीसा उपजे ॥२०॥ ११-१३-१५-१७-१६॥२१॥ वेदनी कर्म थकी ॥११॥ परीसा उपजे १२-३-४-५-६ मोहनी कर्मथी ८ परीसा उपजे दर्शन मोहनीथी १ परीसा उपजे ॥२२॥ चारित्र मोहनीथी ७ परीसा उपजे ॥ ६-७-८-१०-१२-१४-१६ ॥ एव ७ ॥ अतराय कर्म थी १५ परीसा उपजे एव ४ कर्म थी २२ परीसा उपजे ॥ पहिला गुणठाणासु मांडीने नवमा गुणठाणा सुधी २२ परीसा उपजे । ते मांही २० वेदे २ न वेदे सीत होवे तिहा उष्ण नहीं, उष्ण होवे तिहा सीत नहीं, ॥ १ ॥ चरिया होवे तिहा निसिया नथी निसिया होवे तिहा चरिया नथी दसम इग्यारमें बारमें गुणठाणा १४ परीसा उपजे ॥ इहा मोहनी ८ टल्या ते माहे १२ वेदे सीत होवे तिहा उष्ण नहीं चरिया तिहां सभाय नथी सभाय तिहां चरिया नथी ॥ तेरमें चउदमें गुणठाणे परीसा ११ उपजे ज्ञानावरणी २ अतरायनो १ एव ३ वरजा ११ माही ६ वेदे २ न वेदे इति परीसा द्वार सपूर्ण ।

॥ हवे आत्माद्वार लिख्यते ॥

आत्मा ॥ ८ ॥ द्रव्य आत्मा १ कषाय २ जोग ३ अयोग ४ ज्ञान ५ दर्शन ६ चारित्र ७ वीर्य आत्मा ८ ।

पहिले त्रीजे गुणठाणे आत्मा ६ लाभे । ज्ञान चारित्र नथी।
बीजे गुणठाणे चौथे गुणठाणे ७ लाभे चारित्र नथी । ५
गुणठाणासु मांडीने दशमां गुणठाणां सुधी आत्मा = इग्यार-
में बारमे तेरमें गुणठाणे ७ आत्मा लाभे । कषाय नथी । चउद
में गुणठाणो आत्मा ६ लाभे जोग नथी सिद्ध भगवान में
आत्मा ४ लाभे, अथवा ६ लाभे ॥ इति आत्मा द्वार संपूर्ण ॥

॥ हवे जीवना भेद द्वार लिख्यते ॥

जीवना भेद १४ पहिला गुणठाणा मां लाभे । एम यावत चवदमा गुणठाणा सुधी आप २ ना गुण आप २ माही लाभे । इति गुणठाणा द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे जोग द्वार लिख्यते ॥

जोग १५ । मनना ४ वचनना ४ कायना ७ एम १५ पहिले बीजे चौथे गुणठाणे जोग १३ लाभे । अहारक, अहारकनुमिश्र ए २ टाल्या, त्रीजे गुणठाणे १० जोग लाभे मनना ४ वचनना ४ कायाना २ औदारिक अनेवैक्रिय एम१० लाभे । पाच में गुणठाणे १२ जोग मनना ४ वचनना ४ कायाना औदारिकनुमिश्र वेक्रीयनुमिश्र एम १२ छट्ठे गुणठाणे जोग १४ लाभे १ कार्मण वरज्यो । सातमे गुणठाणा में जोग ११ तीन मिश्र अने कार्मण ४ नथी । आठमा

गुणठाणा सु माडी बारमा गुणठाणा सुधी मनना ४ वचन ना ४ कायाना १ एम ९ । तेरमे गुणठाणे जोग ७ मनना २ वचनना २ कायाना ३ एम ७ । चवदमें गुणठाणे जोग नथी इति जोग द्वार संपूर्ण ॥

॥ हवे उपयोग द्वार लिख्यते ॥

उपयोग ॥ १२ ॥ ज्ञानना ५ अज्ञानना ३ दर्शन ४ एम १२ । पहिले त्रीजे गुणठाणे उपयोग ६ लाभे अज्ञान ३ दर्शन ३ एम ६ । बीजे, चौथे पाचमें, अने छट्ठे गुणठाणा सु मांडी १२ गुणठाणा सुधी उपयोग ७ ज्ञानना ४ दर्शनना ३ । तेरमें चवदमें गुणठाणे उपयोग २ केवलज्ञान १ ने केवलदर्शन २ एम सिद्धजीमें पण २ इति उपयोग द्वार संपूर्ण ॥

॥ हवे लेश्या द्वार लिख्यते ॥

लेश्या ६ पहिला गुणठाणा सु माडी छट्ठा गुणठाणा सुधी ६ लेश्या कृष्ण १ नील २ कापत ३ तेज ४ पद्म ५ शुक्ल ६ लेश्या सातमें गुणठाणे लेश्या ३ तेजु १ पद्म २ शुक्ल ३ आठमा गुणठाणा सु माडी ने तेरमा गुणठाणा सुधी १ शुक्ल लेश्या चवदमें गुणठाणे लेश्या नथी इति लेश्या द्वार संपूर्ण ।

॥ हवे हेतुद्वार लिख्यते ॥

हेतु ॥ ५७ ॥ मिथ्यात्व ५ अभीग्रह अणअभीग्रह २ माम ३ अभिनिवेसीक ४ अणाभोग ५ पाच अव्रत १२ छे-कायना ६ इंद्री पाचना ५ मन १ सर्व १२, एम १७ जोग १५, कषाय २५, सोले कषाय, नो नव कषाय सर्व मिली हेतु ५७। पहिले गुणठाणे हेतु ५५ लाभे आहरक १ आहारक मिश्र ए बे जोगटल्या। बीजे गुणठाणे हेतु ५० लाभे ५ मिथ्यात्व टल्या। त्रीजे गुणठाणे हेतु ४३ लाभे अनतानुबधी चोकड़ी टली। औदारिकनो मिश्र १ वैक्रियनो मिश्र २ कार्मण ३ जोगटल्या। चौथे गुणठाणे हेतु ४६ लाभे ३ जोग पाछा आव्या। पाचमें गुणठाणे हेतु ३६ लाभे अप्रत्याख्यानी चोकडी टली। त्रसनी अव्रत टली, कार्मण जोग औदारीक मिश्र नोटल्या। छट्ठे गुणठाणे हेतु २६ लाभे ११ अव्रतटल्या प्रत्याख्यानी चोकडी टली अहारक आहारकनो मिश्र २ जोग पाछा आव्या सातमें गुणठाणे हेतु २४ लाभे। २ मिश्र जोग टल्या। आठमें गुठणाणे हेतु २२ लाभे आहारक १ वेक्रीय २ जोग टल्या। नवमें गुणठाणे हेतु १६ लाभे। ६ हास्यादिक टल्या। दशमें गुणठाणे हेतु १० लाभे। सजलनो क्रोध १ मान २ माया ३ स्त्रीवेद ४ पुरुष-

वेद ५ नपुसकवेद ६ एवं६ टल्या । इग्यारमें बारमें गणठाणे हेतु ९ लाभे जोग संजलनो लोभ टल्यो । तेरमें गणठाणे हेतु ७ लाभे । ते जोग ७ । चवदमें गणठाणे कर्म बधनो हेतु नथी । इति हेतु द्वार सपूर्ण ॥

॥ हवे मार्गणा द्वार लिख्यते ॥

पहिला गणठाणे मार्गणा ४ पहिलानो तीजे चौथे पाचमें सातमें गुणठाणेआवे । १बीजे गुणठाणे मार्गणा बीजानो पहिले गुणठाणे आवे २ । त्रीजे गुणठाणे मार्गणा४ त्रीजानो पहिले चोथे पाचमें सातमें गुणठाणे आवे । तीसरा चौथे गणठाणे मार्गणा ५ चौथाना त्रीजे बीजे पहिले पाचमें सातमें गणठाणे आवे । ने जाय ४ । पांचमा गणठाणे मार्गणा ५ पाचनानु चौथे त्रीजे, बीजे, पहिले, सातमें गुणठाणे जाय ५ । छट्ठे गणठाणे मार्गणा ६ छट्ठाना ५-४ ३ २-१ सातमें गणठाणे जाय । छट्ठे सातमें गुणठाणे मार्गणा ३ सातमानो ६-८-९-१० आवे । काल करेतो चौथे गणठाणे जाय । आठमा गणठाणे मार्गणा ३ नवमें गणठाणे मार्गणा ८, दसमें गुणठाणे मार्गणा ४, दसमानो ९-११-१२ काल करे तो चोथे गुणठाणे आवे । इग्यारमा गुणठाणे मार्गणा २ । ११ १० काल करे तो चौथे गुणठाणे आवे इग्यारमा बारमानो

तेरमे तेरमानो । चवदमानो काल करे तो चाथा गणठाण जाय इति मार्गणा द्वार सपूर्ण ।

हवे ध्यान द्वार लिख्यते ।

ध्यान ४ । आरत १ रोद्र २ धर्म ३ शुक्र ४ पहिले, बीजे त्रीजे, गणठाणे ध्यान २ आर्त, १ रुद्र २ । चौथे, पाचमें, गुणठाणे ध्यान ३ आर्त १ रुद्र २ धर्म ३ छट्ठे गुणठाणे ध्यान २ सातमा गुणठाणा सु माडीने चवदमा गुणठाणा सुधी ध्यान १ शुक्रध्यान १ इति ध्यान द्वार सपूर्ण ।

हवे दडक द्वार लिख्यते ।

दडक २४ पहिले गुणठाणे दडक २४ लाभे । बीजे गुणठाणा दडक १९ लाभे । थावरना टल्या । त्रीजे, चौथेगुणठाणे दडक १६ लाभे ३ विगलेंद्रीनाटल्या । पाचमें गुणठाणे दडक २ लाभे । मनुष्य १, तिर्यंच २, छट्ठा गुणठाणासु माडा चवदमा गुणठाणा सुधी १ मनुष्यनो दडक १ । इति दडक द्वार सपूर्ण २१ ॥

हवे जीवा जोनी द्वार लिख्यते ।

पहिले गुणठाणे ८४०००० लाख जीवा जोनी लाभे बीजे गुणठाणे ३२००००० लाख लाभे । ५२ एकेन्द्रीनी टली त्रीजे गुणठाणे, चौथे गुणठाणे २६००००० लाख

जीवायोनी लाभे । ६ विकलेंद्रीनी टली, पाचमा गुणठाणे १८०००० जीवायोनी लाभे । ८ देवता नारकी टली । छट्ठा गुणठाणासु मांडी चवदमां गुणठाणासुधी १४००००० लाख मनुष्यनी जोनी लाभे । इति जीवाजोनी द्वार सपूर्ण ।

॥ हवे सतर द्वार लिख्यते ॥

सतर कहता आतरो पडतो पहिले गुणठाणे केटलो पड । जघन्य अन्तर मुहुर्तनो उत्कृष्टो ६६ सागरोपम भाजेरो बीजा गुणठाणासु माडी इग्यारमा गुणठाणा सुधी आतरो जघन्य अन्तरमुहरतनु, उत्कृष्टो अर्ध पुद्गल देशे उणो । बारमें तेरमें छुटो ते छुटो फेर पाछो न आवे नीरतर कहता जटली अपाप गुणठाणानी स्थिती छे तेटला काल त्या रहे । इति सतरद्वार सम्पूर्ण ।

॥ हवे यल्पावहुत्व द्वार लिख्यते ॥

सर्वथी थोडा ग्यारमा गुणठाणानाधणी तेथी बारमे गुणठाणा वाला सख्यात गुणा । तेथी आठमा, नवमा, दस माना धणी माहो माहें समतुल्य । तेथी बारमा गुणठाणाना धणी विशेष अधिक । तेथी तेरमा गुणठाणाना सख्याता गुणा । तेथी सातमा गुणठाणाना धणी सख्याता गुणा । तेथी छट्ठा गुणठाणाना धणी सख्याता गुणा । तेथी पांचमा गुणठाणाना धणी असख्याता गुणा । तिर्यंच में मात्रग धणा

तेमाटे तेथी त्रीजा, बीजा, गुणठाणाना धणी असंख्याता गुणा । मिथ्यात्वीनी अपेक्षाये । त्रीजा गुणठाणाना धणी असंख्याता गुणा । देवता नारकीनी अपेक्षा थी चोथा गुण ठाणानाधणी असंख्याता गुणा । स्थिता धणी । तेमाटे तथी चउदमा गुणठाणाना धणी अनंत गुणा सिद्धनी अपेक्षाथी पहिला गुणठाणाना धणी अनंत गुणा । निगोदीया जीव नी अपेक्षा थी ॥ इति अल्पाबहुत्व द्वार सम्पूर्ण ॥

॥ लघु संग्रहणीनो यंत्र ॥

(जंबु द्वीप लाख जोजननो)

एक गाउवातु भरत क्षेत्र छे । ते भरत क्षेत्र केतलु छे तो के ५२६ जोजनने ६ कलानो छे । ५०० को १०० स गुणाकर्‍यो तो ५०००० हजार थया, ५०० को ९० से गुणाकर्‍योतो ४५००० हजार थया, २५ जोजन को १०० से गुणाकर्‍यो तो २५०० थया, २५ जोजन को ९० से गुणाकर्‍यो तो २२५० थया, १ जोजन को १०० से गुणा कर्‍यो तो १०० थया, १ जोजन को ९० गुणाकर्‍यो तो ९० थया, ६ कला को १०० गुणाकर्‍यो तो ६०० थया, ६ कला को ९० गुणाकर्‍या तो ५४० थया, १९ कलानु एक जोजन ९५ कलाना ५ जोजन थया, ६०० कलाना

३० जोजन थया, अने ३० कला वधी ५०० कलाना २५ जोजन थया, अने २५ कला वधी ३० कला २५ कला ४० कला सर्वे भेगी करी त्यारे ६५ कला थई, तेना ५ जोजन थया, सर्वमलीने ६० जोजन थया सर्वेनो आख भेगो करता लाख जोजननो जंबुद्वीप थयो

१६० खाडवा पेला पामाना ६३ खाडवा

१ खाडवानु भरत क्षेत्र
२ खाडवानु हिमवत पर्वत
४ खाडवानु हिमवत क्षेत्र
८ खांडवानु महा हिमवत पर्वत
१६ खाडवानु हरण्य क्षेत्र
३२ खाडवानु निषध पर्वत ए सर्व मलीने ६३ खाडवा थया

॥ बीजा पामाना ॥

१ खाडवानु ऐरावत क्षेत्र
२. खाडवानु शिखरी पर्वत
४ खांडवानु हरण्यवत क्षेत्र
८ खांडवानु रुपी पर्वत
१६ खांडवानु रम्यक् क्षेत्र
३२ नीलवत पर्वत ए वे ६३ खाडवा जाणवा

६४ खांडवानु महाविदेह चेत्र ए सर्व भेगा करता १६० खाडवा थया

३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोस १२८ धनुष १३॥ अगुलनो गुणा करावा

३ लाखने १०० से गुणाकर्यो तो ३ क्रोड थया, ३ क्रोडने १० गुणाकर्यो ३० क्रोड थया.

३० क्रोडने २५ से गुणाकर्यो तो ७५० क्रोड थया

१६ हजार १०० से गुणाकर्योतो १६ लाख थया

१६ लाखने १० से गुणाकर्योतो १ क्रोड ने ६० लाख थया

१ क्रोडने २५ से गुणाकर्योतो २५ क्रोड थया

६० लाखने २५ से गुणाकर्योतो १५ क्रोड थया

२ सौने १०० से गुणाकर्योतो २० हजार थया

२० हजार १० से गुणाकर्योतो २ लाख थया

२ लाखने २५ से गुणाकर्योतो ५० लाख थया

२७ सौने १० से गुणाकर्योतो २७०० सौ थया

२७ सौने १० से गुणाकर्योतो २७ हजार थया

२७ हजारने २५ से गुणाकर्योतो ६७५००० थया

३ कोसने १०० से गुणाकर्योतो ३ सौ कोस थया तेना ७५ जोजन थया

७५ जोजनने १० से गुणाकर्योतो ७५० जोजन थया

७५० जोजनने २५ से गुणाकर्योतो १८७५० जोजन थया
२८ धनुष ने १०० से गुणाकर्योतो २८ सौ थया.
२८ सौ धनुषने १० गुणाकर्योतो २८ हजार धनुष थया
२ हजार धनुषनो एक कोस थाय अने चार कोसनो एक जोजन थाय, २८ हजार धनुष नो ३॥ जोजन थया
३॥ जोजनने २५ से गुणाकर्योतो ८७॥ जोजन थया
१०० धनुषने १०० से गुणाकर्योतो १० हजार थया दस हजारनां ५ कोस थया
५ कोसने १० से गुणाकर्योतो ५० कोस थया तेना जोजन १२॥ थया
१२॥ जोजन ने २५ से गुणाकर्योतो ३१२॥ जोजन थया
१३॥ अगुलने १०० से गुणाकर्योतो १३५० अंगुल थया
१३५० अगुलने १० सु गुणाकर्योतो १३५०० अगुल थया
१३५०० अगुलनां १४० धनुष अने ६० अगुलथया
१४० अगुलने २५ से गुणाकर्योतो ३५०० धनुष थया दो हजार धनुष नो एक कोस अने पनरसौ धनुष थया
६० अंगुलने २५ से गुणाकर्योतो १५०० अगुल थया
९६ अगुलनो एक धनुष १५०० अगुलना १५ धनुषने ६० अगुल थया, सर्वनो आंकडो मेगा कर्यो तो ७००

क्रोड ५६ लाख ६४ हजार १५० जोजन १ गोस १५१५ धनुप अने ६० अगुल थया नानी मघरणी नो गणी पद इति ममास ॥

॥ हवे पर्वत ॥

३८ वैताव्य पर्वत तेमा चार वाटला आकारे । ३४ लांबाछे । १६ वखारा पर्वत छे। एक चित्र अने बीजो विचीत्र एक जमग, अने बीजो समग, बे पर्वत छे २०० कचन गिरीछे। गजदता पर्वत तेमा १ सुमेरु ६ वर्षधर पर्वत छे, ए सर्व इकट्ठा करता २६७ थयाछे

॥ हवे कुटनी गिनती ॥

१६ वखारा पर्वतन शिरो चार २ कुट एकदर ६४ कुट थया मोमनस अने गध मादन तेने शिरो सात २ कुट अन रूपी तथा महा हीमवत पर्वत ए बे पर्वत ने शिरो। आठ २ कुट सर्वे मलीने ६४ थया। ३४ वैताढ्य पर्वत ए बे पर्वत विद्युत पर्वत, निषेध पर्वत, नीलवतपर्वत। मालगिरी पर्वत सूरगिरी पर्वत, ए ३९ पर्वत ने शिरो नव,२ कुट सर्वे मली ३५१ थया

हीमवतपर्वत अने शिखरीपर्वत ए ब पर्वत ने शिरो ग्यार २ कुट सर्वनो आंक मेगो करता ४६७ कुट थया.

विजयने विशे ३४ रिशभ कुट छे । तथा मरूपर्वत, उत्तरकुरु अने देवकुरु क्षेत्र ए त्रणने विशे आठ २ कुट सालिवृक्ष मध्येना हरिकुट अने हरीशो कुट ए सर्वे मलीने ६० भुमिकुट थया

॥ हवे १०२ तीर्थ लिख्यते ॥

मागद तीर्थ, वरदाम तीर्थ, प्रभाम तीर्थ ए तीन तीर्थ ३२ विजय तथा भरत ऐरावत ए ३४ ने विषे तीन २ होय सर्वे मलीने १०२ तीर्थ थया

॥ हवे १३६ श्रेणी लिख्यते ॥

विद्याधर अने अयोगी देवतानी ३४ वैताढ्य पर्वत ने विशे चार २ श्रेणी छे ३४ ने चार गुणा करतां १३६ श्रेणी थाय

॥ हवे नदियो १४५६०००० लिखिये छे ॥

गंगा, सिंधु, रक्ता, ने रक्तवती ए चार नदियो ने विशे प्रत्येके २ चौद २ हजार नदियोना परिवार छे। सर्वे मलीने ५६००० नदियो थयी । हीमवंत अने ऐरावत ए वे क्षेत्रनी रोहिता, रोहीतामा, रूपकला, सुवर्णकला ए चार नदियोने प्रत्येक २ अट्ठावीम २ नदियोना परीवार छे। हरि वर्ष, रम्यक, क्षेत्रनी हरीकता, हरीशलीला, नरकता ए चार

नदियोने प्रत्येक २ छप्पन २ हजार नदियो ना परिवार छे। देवकुरुने, उत्तरकुरुमा ६ द्रह तेना नाम पद्म, महापद्म, पुण्डरीक महापुण्डरीक, तीगीरछ अने केसरी ए ६ द्रहनी ६ नदियोने विशे चौद २ हजारनो परिवार सर्वे थइने ८४००० थई पश्चिम महाविदेहनी सोल वीजय तेमा बत्री सनदियों तेने प्रत्येक २ चौदे २ हजारनो परिवार सर्वे चार लाख ४८ हजार नदियों थई। सर्व नो आंक मेगो करता सीता नदिमा पांच लाखने बत्रीस हजार नदियों थई। अने सीतादा नदीमां पांचलाखने बत्रीसहजार नदियोनो परिवार सर्वे नदियोनो परिवार मेगो करता चौदेलाख ने ५६ हजार नदियो थई

बासठ मार्गणाए ५६३ भेद जीवना लखियेछे

१९८ देवता नी गति १५ परमाधामीना, १० भुवनपतिना, १६ वाणव्यतरना १० तिर्यगजृंभकना, १० जोतीषीना, १२ देवलोकना, ३ किल्वीषीया ना, ९ लोकांतिक ना, १२ नवग्रैवेग ना, ५ अनुत्तर विमाना, एवठा ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता मिलाकर १९८ भेद थया

३०३ मनुष्यनी गति १५ कर्मज भूमि तेएम ५ भरत ५ ऐरावत, ५ महाविदेह, मिलकर १५ भेद। ३० अकर्मज भूमि ते एम ५ हेमवत, ५ ऐरण्यवंत, ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक,

५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु, मिलकर ३० भेद । ५६ अंतर्द्विप मिलकर १०१ पर्याप्ता, १०१ अपर्याप्ता, १०१ समुछिम मिलकर ३०३ भेद.

४८ तिर्यंचनी गति २२ एकेंद्रीना ६ विकलेंद्रीना २० पचेंद्री तिर्यंचना एम ४८ भेद

१४ नरकनी गति ७ नारकी पर्याप्ती ७ अपर्याप्ती एम १४ भेद.

२२ एकेंद्रीनी मार्गणा ए ४ पृथ्वीकाय ४ अपकाय ४ तेउकाय ४ वाउकाय ६ वनस्पतिकाय एम २२ भेद
बेंद्री मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद.
२ बेंद्री मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद
२ तेंद्रीनी मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद

२ चौरींद्रीनी मार्गणा ए १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता एम २ भेद

५३५ पंचेंद्रीनी मार्गणा ए १९८ देवताना ३० मनुष्यना

२० तिर्यंच पंचेंद्रीना १४ नारकीना एम ५३५ भेद

४ पृथ्वी कायनी मार्गणा एम १ सुक्ष्म १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ अपकायनी मार्गणा एम सुक्ष्म १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ तेउकायनी मार्गणा एम १ सुक्ष्म १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

४ वाउकायनी मार्गणा एम १ सुक्षम १ बादर २ पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

६ वनस्पतिनी मार्गणा एम २ प्रत्येक वनस्पति काय १ पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ भेद

४ साधारण वनस्पति काय न एम १ सुक्ष्म १ बादर पर्याप्ता २ अपर्याप्ता मिलकर ४ भेद

५४१ त्रसकायनी मार्गणा एम १९८ देवताना ३०३ मनुष्यना २० तिर्यंच पचेंद्री १४ नारकीना ६ विगलेंद्रीना एम मिलकर ५४१ भेद

२१२ मनयोगनी मार्गणा एम ९९ देवताना पर्याप्ता १०१ मनुष्यना पर्याप्ता ५ तिर्यंच पचेंद्रीना पर्याप्ता ७ नारकीना पर्याप्ता मिलकर २१२ भेद

२२० वचन योगनी मार्गणा एम कि २१२ मनयोगवाला अने ५ तिर्यंच पचेंद्री असनीना पर्याप्ता ३ विगलेंद्रीना पर्याप्ता एम २२० भेद.

५६३ काया योगनी मार्गणा ए सर्व याने ५६३ भेद

४१० पुरुष वेदनी मार्गणा एम १९८ देवताना २ मनुष्यना पर्याप्ता १०१ अपर्याप्ता १०१ मिलकर २०

१० तिर्यंच पचेन्द्रीना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता १० भेद सब सब मिलकर ४१० भेद

३४० स्त्रियों वेदनी मार्गणा एम १२८ देवताना १५ परमाधामीना १० भुवनपतिना १६ वाणव्यंतरना १० तिर्यंगजमकना १० जोतिषीना १ किल्विषियाना २ देवलोक ना एम ६४ पर्याप्ता ६४ अपर्याप्ता मिलकर १२८ भेद २०२ गर्भज मनुष्यना १० गर्भज तिर्यंच पचेन्द्री ना एम ३४० भेद

१९३ नपुंसक वेदनी मार्गणा एम १४ नारकीना ४८ तिर्यंचपचेन्द्रीना १०१ समुर्छिम मनुष्यना ३० कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मिलकर १९३ भेद

५६३ क्रोधनी मार्गणा ए ५६३ भेद.

५६३ माननी मार्गणा ए ५६३ भेद

५६३ मायानी मार्गणा ए ५६३ भेद

५६३ लोभनी मार्गणा ए ५६३ भेद

४२३ मतिज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना सातमी नरकना अपर्याप्ता बिना १० तिर्यंच गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम १० भेद २०२ मनुष्य गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एम २०२ भेद देवताना १९८ भेद

४२३ श्रुतज्ञाननी मार्गणा ए १३ नारकीना १० तिर्यंचना २०२ मनुष्यना १९८ देवताना सर्व ४२३ भेद

२४६ अवधिज्ञान मार्गणा ए १३ नारकीना ५ तिर्यंच गर्भज पर्याप्ताना १९८ देवताना ३० मनुष्य गर्भजना कर्म भूमिना १५ पर्याप्ता १५ अपर्याप्ता एम ३०

१५ मनपर्यवज्ञान मार्गणा ए १५ मनुष्यगर्भजना कर्मभूमिना पर्याप्ता

१५ केवलज्ञाननी मार्गणा ए १५ गर्भजमनुष्य कर्म भूमिना पर्याप्ता

५३५ मतिज्ञान मार्गणा ए १४ नरकना, ४८ तिर्यचना ३०३ मनुष्यना १७० देवताना एम ६ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विमाणना ॥ १४ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मिलकर २८ विना १७० भेद लीना

५३५ श्रुतअज्ञान मार्गणा ए मति अज्ञाननी परे जाणना

२२४ विभंग अज्ञान मार्गणा ए १४ नरकना १० तिर्यंचना ३० मनुष्यना १५ कर्म भुमिना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता १७० देवताना ६ लोकांतिकना ५ अनुत्तरविमाण १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता मिलकर २८ विना १७० भेद

१५ सामाइक चारित्रने १५ कर्म भुमिना पर्याप्ता

१० छेदोपस्थापनिक चारित्रने १० मनुष्य ५ भरत ५ एरावत एम १० भेद

१० परीहारविशुध चारित्रने १० मनुष्यना उपर परमाने

१५ सुक्षमसंपराय चारित्रना १५ कर्मभुमि मनुष्यना.

१५ यथाख्यात चारित्रना १५ मनुष्य कर्म भूमिना

२० देशविरती चारित्रना १५ कर्म भुमिना मनुष्य ५ तिर्यंच गर्भज पर्याप्ताना २० भेद

५६३ अविरति चारित्रना

२१८ चक्षु दर्शन मार्गणा ए ७ नारकीना पर्याप्ता ११ तिर्यंचना ५ सन्नी पंचेंद्री पर्याप्ताना ५ असन्नी पंचेंद्रीना पर्याप्ता १ चउरींद्री पर्याप्ताना १०१ मनुष्य गर्भज पर्याप्ताना ९९ देवताना पर्याप्ताना एकंदर मिलकर २१८ भेद.

५६३ अचक्षु दर्शन मार्गणाने विषे.

२४६ अवधि दर्शन मार्गणा ए अवधिज्ञाननी परे जाणवो.

१५ केवलदर्शन मार्गणा ए कर्मभुमिनामनुष्य ४५६ कृष्ण लेश्यानीमार्गणाए ६ नारकीना १ पांचमी १ छट्ठी १ सातमी एम ३ नरकना पर्याप्ता अने ३ अपर्याप्ताना एम ६ भेद ४८ तिर्यंचना, ३०३ मनुष्यना, १०२ देवताना, १५ परमाधामी १० भुवनपतिना १६ वाणव्यंतरना १० तिर्यंगजृंभकना ५१ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता मिलकर १०२ भेद.

४५६ नीललेश्या ए ६ नारकीना त्रीजी १ चौथी १ पाचमी १ एम ३ नरक पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यंचना ३०३ मनुष्यना १०२ देवताना कृष्ण लेश्यानी परे

४५९ कापोत लेश्या नी मार्गणा ए ६ नारकी ना १ पहिली १ बीजी १ त्रीजी एम ३ नारकी पर्याप्ता, अपर्याप्ता ६ भेद ४८ तिर्यंचना, ३०३ मनुष्यना, १०२ देवताना कृष्णलेश्यानी परे जानवा

३१३ तजुलेश्यानी मार्गणा ए १३ तिर्यंचना १० गर्भज तिर्यंचपर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३ पृथ्वीकाय १ अपकाय १ वनस्पति एम मिलकर १३ मनुष्य गर्भजना २०२ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता, ९८ देवताना १० भुवन पति १६ वाणव्यतर १० तिर्यगजृभक १० जोतिषी १ किल्विषीयानो २ देवलोक एकदर ४९ पर्याप्ता अने ४६ अपर्याप्ता ९८ भेद

६६ पद्मलेश्यानी मार्गणा ए १० तिर्यंचना गर्भज पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ३० मनुष्यना १५ कर्मजभूमिना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २६ देवताना त्रीजो, चौथु, पाचमु ३ किल्वीषीयानो अने ९ लोकांतिक एम १३ पर्याप्ता अने १३ अपर्याप्ता एम २६ भेद

८४ शुक्ललेश्यानी मार्गणा ए १० तिर्यंचना ३० मनुष्यना ४४ देवताना १ छट्ठो १ सातमु १ आठमु १ नवमु

१ दशमु १ ग्यारमु १ बारमु देवलोकना १ किल्वीषियानो ८ नवग्रैवेग ५ अनुत्तरविमाण एम २२ पर्याप्ता अने २२ अपर्याप्ता मिलकर ४४ भेद.

५६३ भव्यनी मार्गणा ए सर्व ५६३ भेद

५०५ अभव्यनी मार्गणा ए १५ परमाधामीना ८ लोकातिकना ५ अनुत्तरविमाणना एम २९ पर्याप्ता अपर्याप्ता ५८ विना ५ ५ अने ८ लोकातिकना ५ अनुत्तर विमाणना एम १४ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २८ भेद सर्व ने गणिये तो ५३५ भेद.

२०२ उपसमसमकितनी मार्गणा ए ७ नारकीना पर्याप्ताना ५ तिर्यंचना गर्भज पर्याप्ताना १०१ मनुष्यना गर्भज पर्याप्ताना ६० देवताना ८ लोकातिक विना पर्याप्ताना सर्वार्थसिद्धिनो १ नगणी ए तो २०२ भेद

१६८ क्षायक समकितनी मार्गणा ए ६ नारकीना प हिलो, बीजो, त्रीजो, एम ३ पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ६ नारकी ना २ तिर्यंचना थलचर पर्याप्ता अने अपर्याप्ता २ भेद

९० मनुष्यना १५ कर्मभुमिना पर्याप्ता अने ३० अ कर्मभुमिना एम ४५ पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ९० भेद.

७० देवताना १२ देवलोक ८ लोकातिक ९ नवग्रैवेक ५ अनुत्तर विमाणना एम ३५ पर्याप्ता अपर्याप्ता७० भेद

४२३ क्षयोपसमसमकितना मार्गणा ए १३ नारकीना १० तिर्यंचना २०२ मनुष्यना १९८ देवताना.

१९८ मिश्रसमकितनी मार्गणा ७ नारकीना पर्याप्ता ८५ देवताना ९ लोकांतिक ५ अनुत्तर विमाण एम १४ पर्याप्ताना विना ८५ देवताना ५ तिर्यंच पचेंद्री पर्याप्ताना १०१ मनुष्यना गर्भज पर्याप्ताना

४०० सास्वादन समकितनी मार्गणा ए ७ नरकना पर्याप्ताना २१ तिर्यंच गतिना ३ एकेंद्री अपर्याप्ताना १ पृथ्वीकाय १ अपकाय १ वनस्पतिकाय ३ पर्याप्ता ३ विगलेंद्री अपर्याप्ताना ५ असन्नी अपर्याप्ताना १० सन्नी अपर्याप्ताना पर्याप्ताना २०२ मनुष्य गतिना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ताना १७० देवताना ९ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विना विमाणना एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता २८ अने १७० देवताना

५३५ मिथ्यात्वनी मार्गणा ए ५६३ माहेथी ६ लोकांतिकना ५ अनुत्तर विमाणना एम १४ पर्याप्ता १४ अपर्याप्ता २८ विना ५३५ भेद

४२४ सन्नीनी मार्गणा ए ५६३ माथी २२ एकेंद्रीना ६ विगलेंद्रीना १० असन्नी तिर्यंच पचेंद्रीना एम ३८ समुर्छिम १०१ मनुष्यना एम १३९ विना ४२४ भेद

१३९ असन्नीनी मार्गणा ए २२ एकेंद्रीना ६ विगलें-द्रीना १० तिर्यंच पचेंद्री समुर्छिमना १०१ मनुष्य समुर्छि-मना एम १३९ भेद

५६३ आहारनी मार्गणा ए सर्व

३४७ अणाहीरानी मार्गणा ए ७ नारकीना अपर्याप्ता ना २४ तिर्यंचना सर्व अपर्याप्ताना २१७ मनुष्यना एम १०१ समुर्छिमना १०१ गर्भज अपर्याप्ता १५ कर्मभुमिना पर्याप्ता एम २१७ भेद ९९ देवताना अपर्याप्ताना एम सर्व ३४७ भेद.



द्वसयोगी भागा		त्रिमयोगी भागा		
१ उपसम	क्षायक	११ उपसम	क्षायक	क्षोपसम
२ उपसम	क्षोपमम	१२ उपसम	क्षायक	उदीक
३ उपसम	उदीक	१३ उपसम	क्षायक	परिणामिक
उपसम	परिणामिक	१४ उपसम	क्षोपसम	उदीक
५ क्षायक	क्षोपसम	१५ उपसम	क्षोपसम	परिणामिक
६ क्षायक	उदीक	१६ उपसम	उदीक	परिणामिक
७ क्षायक	परिणामिक	१७ क्षायक	क्षोपसम	उदीक
८ क्षोपसम	उदीक	१८ क्षायक	क्षोपसम	परिणामिक
९ क्षोपमम	परिणामिक	१९ क्षायक	उदीक	परिणामिक
१० उदीक	परिणामिक	२० क्षापसम	उदीक	परिणामिक

चतुर्थ सयोगी भागा

२१ उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक
२२ उपसम	क्षायक	क्षापसम	परिणामिक
२३ उपसम	क्षायक	उदीक	परिणामिक
२४ उपसम	क्षोपसम	उदीक	परिणामिक
२५ क्षायक	क्षोपसम	उदोक	परिथाणिक

पंच मयोगी भांगा				
११उपसम	क्षायक	क्षोपसम	उदीक	परिणामिकसर्व २६

बाठस मार्गना ऊपर त्रेपन भाव

मागणा	उपसम	क्षयक	क्षयकउपसम	उदीरत	परिणामिक	सर्वभाव
६२	२	६	१८	२१	३	५३
१ देवगती	१	१	१५	१७	३	३७
२मानवगती	२	६	१८	१८	३	५०
३तिर्यंचगती	१	१	१६	१८	३	३६
४नरकगती	१	१	१५	१३	३	३३
५एकेंद्रीजाति		०	८	१४	३	२५
६बेंद्रीयजाति		०	८	१३	३	२४
७तेंद्रीजाति		०	८	१३	३	२४
८चोरीद्रीजाति		०	६	१३	३	२५
९पचेंद्रीजाति	२	६	१८	२१	३	५३

३२ श्रुतअज्ञान	,,	०	१०	२१	३	३४
३३ विभंग ,,	०	०	१०	२१	३	३४
३४ सामायक-चारित्र	२	१	१४	१५	२	३४
३५ छेदोपस्थानी	२	१	१४	१५	२	३४
३६ परिहार-विशुद्धी	१	१	१४	१४	२	३२
३७ सुक्ष्मसंपराय	२	१	१३	४	२	२२
३८ यथाख्यात	२	९	१२	३	२	२८
३९ देशविरति	१	१	१३	१७	३	३५
४० असयम	१	१	१५	२१	३	४१
४१ चक्षुदर्शन	२	२	१८	२१	३	४६
४२ अचक्षुदर्शन	२	२	१८	२१	३	४६
४३ अवधिदर्शन	२	२	१५	१९	२	४०
४४ केवलदर्शन	०	९	०	३	१	१३
४५ कृष्णलेश्या	१	१	१८	१६	३	३९
४६ निललेश्या	१	१	१८	१६	३	३९
४७ कापोत ,,	१	१	१८	१६	३	३९
४८ तेजोलेश्या	१	१	१८	१५	३	३८
४९ पद्मलेश्या	१	१	१८	१५	३	३८
५० शुक्ललेश्या	२	९	१८	१५	३	४७
५१ भव्य	२	९	१८	२१	२	५२
५२ अभव्य	०	०	१०	२१	२	३३
५३ क्षायकउप	०	०	१५	१९	२	३६
५४ उपसमिय	२	०	१४	१९	~	७
५५ दायक		९	१४	१२		

५६ मिश्रसम	०	०	१४	१६	२	३५
५७ मिथ्यासम	०	०	१०	२१	३	३४
५८ सास्वादन	०	०	१०	२०	२	३२
५६ सञ्ज्ञी	२	६	१८	२१	३	५३
६० असञ्ज्ञी	०	०	६	१५	३	२७
६१ आहारक	२	६	१८	२१	३	५३
६२ अणाहारक	१	६	१५	२१	३	४६
६३ मिथ्यात्व	०	०	१०	२१	३	३
गुणठाणा						
६४ सास्वादन	०	०	१०	२०	३	३३
६५ मिश्र ,,	०	०	१२	१६	२	३३
६६ अविरति ,,	१	१	१२	१६	२	३५
६७ देशविरती,	१	१	१३	१७	२	३४
६८ प्रमथ ,,	१	१	१४	१५	२	३३
६९ अप्रमथ ,,	१	१	१४	१२	२	३०
७० अपूर्वकरण,	१	१	१३	१०	२	२७
७१ अनिवृत्ति,	२	१	१३	१०	२	२८
७२ सुक्ष्मसपराय	२	१	१३	४	२	२२
७३ उपशातमोह	२	१	१२	३	४	२०
७४ क्षीणमोह,	०	२	१२	३	२	२०
७५ सयोगी,,	०	६	०	३	१	१३
७६ अयोगी,,	०	६	०	२	१	१२

॥ सम्पूर्ण ययो ॥

पाचसो ६३ [illegible] जीवना भेद द्विप क्षेत्र आसरी

क्षेत्र	नकना १४ भेद	तिर्यंचना ४८ भेद	मनुष्यना ३०३ भेद	देवताना १९८ भेद	सवसख्या ५६३
१ भरत मे	०	४८	३ कमभूमि	०	५१
२ एरावत मे	०	४८	३	०	५१
३ महाविदेहमे	०	४८	३	०	५१
४ जंपुद्विप मे	०	४८	२७ कु ३ क ग प अ स ९ प अ स	०	७५
५ लवणसमुद्र मे	०	४८	१६८ ५६ अतरद्वीप प अ स	०	२१६
६ घातकीखड मे	०	४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	०	१०२
७ कालोदधिसमु	०	४८	०	०	४८
८ आघोपुष्करा वरत द्विप मे	०	४८	५४ कु ६ क ग प अ स १८ प अ स	०	१०२
९ नदीश्वरद्विप प्रमुख मे	०	४६ बादर तेउकायटलो	०	०	४६

क्षेत्र		नरकना १४ भेद	तिर्यचना ४८ भेद	मनुष्यना ३०३ भेद	देवताना १९८ भेद	सर्व ५६३
१०	तिर्छालोक मे	०	४८	३०३	७२ दे १६ व्य १० ज्यो १० ग्रीयक प अ	४२३
११	मधलोक मे	१४	४८	३ उडाषिजे सनीनो प अ छे	५०भु १५प १०भु प अ	११५
१२	उधलोक मे	०	८६ थलचर व नथी	०	७६ देव १२ दे० ३ नि, ६प ६ लो प अ ५ मनुत्तरविमान	१२२
१३	मेरुगिरपर्वत	०	४८	०	०	४८
१४	अढाईद्विप मे	०	४८	३०३	०	३५१
१५	बार देवलोक मे	०	२० तेउवाय टाली	०	४८ दे १२ दे ६ लो ३ कि प अ	६८
१६	नव ग्रेविक मे	०	१४ भु ५ सु प अ २ वाद प अ २ पृथवी वाउ प अ	०	१८ दे ९ ग्रे प अ	३२

क्षेत्र	नरकना १४ भेद	तिर्यंचना ४८ भेद	मनुष्यना ३०३भेद	देवताना १९८ भेद	सर्व ५६३
·/ लावनेछेहड	०	१२ तीं १० सु प अ २ वा प अ पृथ्वी	०	०	१२
० आधा गाव म	०	४८	३	०	५१
६ मुट्ठी मे	०	६	०	■	४
·० नदीश्वरसमुद्र प्रमुख मे	०	४६ तेउ बादर टाली	०	०	४६

पला आराना युगलियानु ३ पल्योपमनुं आयुष्य ३ कोसनु शरीर त्रीजे दिवसे तुवर प्रमाण अहार करे ५५६ पासली ४९ दिवस प्रति पालणा करे बीजे आरे २ पल्योपमनुंआयुष्य २ कोसनुं शरीर बीजे दिवस बोर प्रमाणे अहार करे १२८ पासली ६४ दिवस प्रतिपालणा करे।

त्रीजा आराना युगलियानुं एक पल्योपमनुं आयुष्य १ कोसनु शरीर एकांतरे आमला जेटलोअहार करे ६४ पासली ७९ दिवस प्रतिपालणा करे

२१	भरतक्षेत्र १४ खघटा यो	७ लघ कालना ६ भेद टाल्या माथी १ टाल्यो	५३०	५५७
२२	जबुद्विप १४ मघटायो	७ लघ कालना ६ भेद टाल्यो माथी १ टाल्यो	५३०	५५७

अजीवना भेद ५६०	धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति १६	आकास्ति काय ८	कालास्तिका य ६	पुदगलास्ति काय ५३०	सवस ५६०
२३ लवण समुद	१४ न्वधटाल्यो	७ न्वध टाल्यो	कालना ६ भद माथी १ टाल्यो	५३०	५५७
२४ नदीश्वर द्विप	१४ न्वधटाल्यो	७ न्वध टाल्यो	०	५३०	५५१

जीवना चउदा भेद ऊपर गुणठाणा, योग, उपयोग, लेश्या, बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता

जीवना १४ भेद	गुण	योग	उपयोग	लेश्या	बंध	उदे	उदीरतो	सत्ता
१४ सनीपचेंद्री पर्याप्ता	१४	१५	१२	६	७८	८७	४८	७८२
					६१	४	६५२	०
१३ सज्ञोपचेंद्री अ प	३	३	८	६	७८	८	७८	८
१२ असनीपचद्रो पर्याप्ता	१	२	४	३	७८	८	७८	८
११ असनीपचद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
१० चौरीद्री पर्याप्ता	१	२	३	३	७८	८	७८	८
९ चौरीद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
८ तेंद्री प	१	२	३	३	७८	८	७८	८
७ तेंद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
६ वेंद्री प	१	२	३	३	७८	८	७८	८
५ वेंद्री अ प	२	२३	३	३	७८	८	७८	८
४ बादर एकद्री प	१	३	३	३	७८	८	७८	८
३ बादर एकेंद्री अ प	२	२३	३	४	७८	८	७८	८
२ सुक्षम एकेंद्री प	१	१	२	२	७८	८	७८	८
सुक्षम एकेंद्री अ प	१	२३	३	३	७८	८	७८	८

शेस क्रुट नी गीनती.

पाच भरत अने पाच ऐरावत ए दस क्षेत्रनी तीस चोवीसी तेना मातसेने वीस प्रतिमा थयी पाच महाविदेह क्षेत्रनी पाच बत्रीसी तेना एकसौने साठ प्रतिमा थई. एक सोने वीस कल्याणक वीस वेरमान चार सास्वता सर्वे मलीने एक हजारने चोवीस प्रतिमा थई

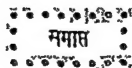
चोरासीलाख जीवाजोनीना प्राण, पर्याप्ती, इन्द्री

चोरासी लाख जीवाजोनीनी इन्द्री दोक्रोड सात लाख पृथ्वीकाय, सातलाखअपकाय, सातलाखतेउकाय सातलाख-वाउकाय, दसलाख प्रत्येकवनस्पतिकाय, चउदालाख साधारण वनस्पति, काय, ए बावनलाख एकेन्द्रीनीथई बेइ द्रीनी चार लाख, तेइ द्रीनी छे लाख, चौरींद्रीनी आठलाख, त्रण-विकलेंद्रीनी अठारा लाख, देवतानी वीस लाख, नारकीनी वीस लाख तिर्यंचपचेंद्रीनीवीसलाख मनुष्यनीसत्तरलाख सर्वे मिली बे क्रोड इन्द्री थई

चौरासी लाख जीवाजोनीना प्राण ६ क्रोड १० लाख बावनलाख एकेंद्रीना ४ प्राण तेने चार गुणा करता बे क्रोड आठ लाख प्राण थया बेंद्रीना बारालाख, तेंद्रीना

चउदलाख प्राण थया, चौरिंद्रीना सोलालाख, प्राणथया, त्रण विकलेंद्रीना त्रतालीस लाख प्राण थया, देवताना चालीस, लाखनारकीना चालीस लाख, तिर्यंचपचेंद्रीना चालीस लाख मनुष्यना एक क्रोड चालीस लाख सर्वना भेगा करता पांच क्रोड दस लाख प्राण थया

३ क्रोड ९४ लाख ॥ चौरासी लाख जीवायोनीनी पर्याप्ती ॥ बावन लाख एकेंद्रीनी चार पर्याप्ती तेने चार गुणा करता ने क्रोड आठलाख पर्याप्ती थई बेंद्रीने दसलाख तेंद्रीने दस लाख चौरिंद्रीने दस लाख त्रण विकलेंद्रीन तीस लाख, पर्याप्ती थई देवतानी २४ लाख, नारकीनी चोवीस लाख, तिर्यंच पचेंद्रीनी चोवीस लाख, मनुष्यनी चोवीस लाख, पर्याप्ती सर्वे भेगीकरता ३ क्रोड चोराणु लाख पर्याप्ती थई



८	८०००	१००००	१४०००	२०००	७६००	″	१०	१०००	″	भाद्रव कृ० ७	″
९	७५००	७५००	१३०००	१५००	६०००	।।०	२	″	″	भाद्रव शु० ९	″
१०	″	७०००	१२०००	१४००	५८००	हजार पूर्व २५	१	।		वइशाख कृ० २	″
११	६०००	६५००	११०००	१३००	५०००	लक्ष वर्ष २१	लक्ष वर्ष ८४	″	″	श्रावण कृ० ३	″
१२	६५००	६०००	१००००	१२००	४७००	५४	७२	६००	″	आषाढ शु० १४	″
१३	५५००	५५००	९०००	११००	३६००	१५	६०	″	″	आषाढ कृ० ७	″
१४	५०००	५०००	८०००	१०००	३२००	७।।	३०	७००	″	चइतर शु० ५	″
१५	४५००	४५००	७०००	९००	२८००	२।।	१०	१०८	″	जेठ शु० ५	″
१६	४०००	४३००	६०००	८००	२४००	हजार वर्ष २५	१	९००	।	जेठ कृ० १३	″
१७	३३४०	३२००	५१००	६७०	२०००	२३।।।	हजार वर्ष ९५	१०००	।	वइशाख कृ० १	″
										मागसर	